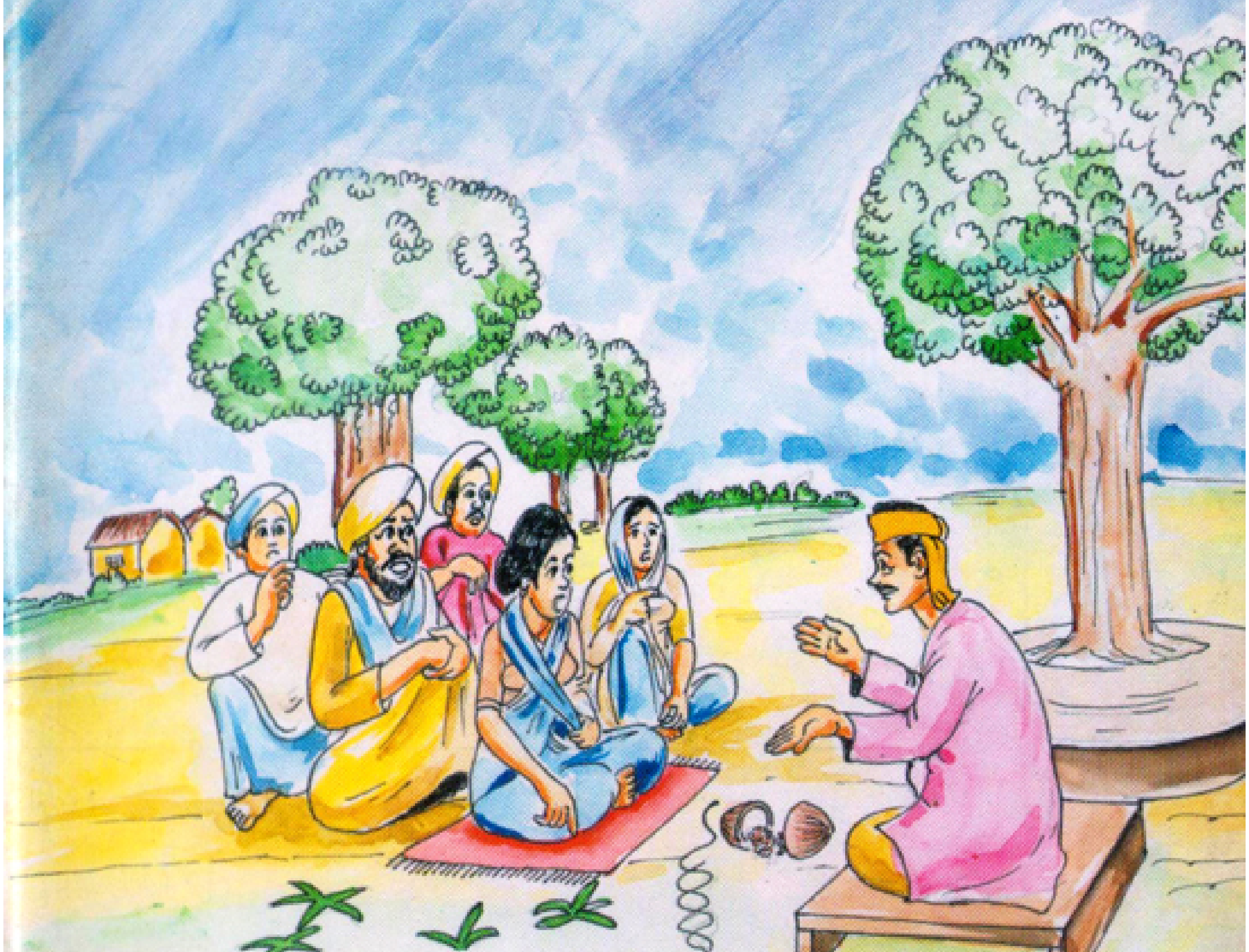
चमत्कार का रहस्य



डॉ० विजय गुप्ता

चमत्कार का रहस्य

डा. विजय गुप्ता

वि P
V प्र

विज्ञान प्रसार

प्रकाशक

विज्ञान प्रसार

सी-24, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया

नई दिल्ली-110 016

पंजीकृत कार्यालय : टेक्नोलॉजी भवन, नई दिल्ली-110 016

फोन : 6864022, 6864103, 6864157

फैक्स : 6965986

इंटरनेट : http://www.vigyanprasar.com

ई-मेल : vigyan@hub.nic.in, vigyanp@giasdl01.vsnl.net.in

चमत्कार का रहस्य

संपादक : हरिकृष्ण देवसरे

मुख–पृष्ठ : राजकमल

शब्द-संसाधन एवं पृष्ठ-संयोजन : सुभाष चन्द्र

ISBN 81-7480-069-7

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32

मूल्य : रुपये 25.00

कथा–क्रम

प्रस्तावना

इस संसार में सृष्टि की कोई भी वस्तु रहस्य से खाली नहीं है। वानर से आदिमानव और उससे आधुनिक मानव बनने तक मनुष्य में प्रकृति को जानने की जिज्ञासा रही है। इसी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य ने प्रकृति के रहस्यों पर से परदा उठाने के प्रयास किए हैं। इन्हीं प्रयासों से जन्मा है 'विज्ञान'। आदिकाल से ही मनुष्य विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों में विश्वास करता आया है। परंतु जैसे–जैसे विज्ञान ने तरक्की की अंधविश्वास खंडित होने लगे। किंतु मनुष्य का ज्ञान उसकी समझदारी तक ही सीमित है । उसके पश्चात अज्ञानतावश वह अंधविश्वासों से पुनः घिर जाता.है। आधुनिक युग में जहाँ प्राचीन, अंधविश्वास खंडित हुए, वहाँ नयों ने जन्म लिया, जैसे– प्राचीन मानव तूफान व बिजली कड़कने को ईश्वर का क्रोध समझता था, वैसे ही आधुनिक युग में अनेक झूठी बातों में विश्वास करने लगा। इस प्रकार के अंधविश्वासी व्यक्ति न केवल भारतवर्ष में अपितु संसार के कोने–कोने में हैं।

अत्यंत क्षोभ का विषय यह भी है कि हमारे देश की सत्तर प्रतिशत जनता अनपढ़ है। विज्ञान के प्रयोगों, हाथ की सफाई इत्यादि की मदद से कुटिलवृत्ति वाले कुछ लोग दूसरों की कमजोरियों, अज्ञानता व मजबूरी का फायदा उठाकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। इन्हीं लोगों ने षड्यन्त्र से 'चमत्कारी पुरुष' जैसे– तांत्रिक, सिद्ध पुरुष आदि का ढोंग रचा है। ये चमत्कारी व्यक्ति पानी में आग लगा सकते है, आग पर चल सकते हैं, हवा से भभूत पैदा कर सकते हैं, इत्यादि।

किसी ने ठीक ही कहा है कि अज्ञानता सभी दु:खों की जड़ है। अगर हम ज्ञान का प्रसार नहीं करेंगे तो अंधविश्वासों के दलदल में फँसे रहेंगे और ये 'चमत्कारी पुरुष' दूसरों की कमजोरी का फायदा उठाकर अपनी जेबें भरते रहेंगे। जबकि वास्तविकता यह है कि चमत्कार या जादू कोई

दिव्यशक्ति या मंत्रशक्ति नहीं है। जिस क्रिया को करने का तरीका दृष्टिगोचर न हो उसे जादू समझ लिया जाता है। जबकि वह मात्र विज्ञान या तकनीक पर आधारित एक कला है जो कि हाथ की सफाई, चतुरता, फुर्ती व लगातार अभ्यास से निखरती है। जहाँ इस कला का लोगों को विस्मित करने और मनोरंजन के लिए प्रयुक्त किया जाना चाहिए वहाँ इसका दुरुपयोग हो रहा है।

यहाँ प्रस्तुत कहानियों के माध्यम से दर्शाया गया है कि भारत में किस प्रकार कुछ भ्रष्ट व्यक्ति 'चमत्कारी पुरुषों' का ढोंग रचाकर भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाते हैं अथवा लोगों की मजबूरियों का फायदा उठाते हुए उन्हें न केवल विभिन्न तरीकों से ठगते हैं अपितु उनके जीवन को भी खतरे में डाल देते हैं। अगर आम जनता को इनकी चालों का पता हो तो वह इन लोगों के जाल में न फँसेगी। इन कहानियों में चमत्कारी पुरुषों द्वारा किए गए चमत्कारों के पीछे छिपी हाथ की सफाई या विज्ञान के प्रयोगों का दुरूपयोग उजागर किया गया है

आशा है, पाठकगण इन कहानियों से जानकारी लेकर लेकर इन ढोंगियों के षड़यंत्रों से अपने को बचा कर रखेंगे।

— विजय गुप्ता

नकल के लिए अकल चाहिए

उस दिन मौसम काफी सुहावना था। अन्य बच्चों की तरह राजू और पम्मी स्कूल की तरफ खेलते कूदते जा रहे थे। रास्ते में एक जगह काफी भीड़ देखकर दोनों ठिठक गए और उस तरफ उत्सुकतावश बढ़ चले। दोनों छोटे तो थे ही लोगों की टांगों के बीच से निकलते हुए उन्हें आगे पहुँचने में कोई परेशानी नहीं हुई। वहाँ पर एक आदमी पगड़ी लगाए लगातार साईकिल चला रहा था। उसने साइकिल चलाते–चलाते ही शेव बनाई, फिर जब नहाकर कमीज बदली तो नाश्ते की बारी आई। उसने अपने साथी को इशारा करके मिट्टी का तेल और चाय का बर्तन लाने को कहा। उसके साथी ने उसकी पगड़ी पर तौलिया रख कर उस पर मिट्टी का तेल डाल दिया। साईकिल चालक ने भीड़ में से किसी के भी द्वारा तौलिये को दियासलाई दिखाने की प्रार्थना की। जब एक व्यक्ति ने आगे बढ़ कर पगड़ी को दियासलाई दिखलाई तो तौलिये पर भक् से आग जल पड़ी। चाय का बर्तन उस पर रख दिया गया और पाँच मिनट में चाय तैयार थी।



तभी भीड़ में खड़े एक बच्चे ने राजू के पास आकर धीमी आवाज़ में कहा 'राजू' और सामने की तरफ इशारा किया । राजू ने उधर देखा तो उसके होश उड़ गए। वहां तो उसके बड़े भईया देबू खड़े थे। राजू पम्मी का हाथ पकड़ कर वहाँ से झट से भागा फिर तो उन्होंने स्कूल पहुँचकर ही दम लिया।

स्कूल लगे काफी समय हो चुका था। मास्टर जी ने उन दोनों को बिना कोई कारण पूछे देर से आए बच्चों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। अगले पीरियड तक वे अपनी सजा भूल गए थे क्योंकि जब उन्होंने मिर्च मसाला लगा कर आज की खबर सुनाई तो वे सारी कक्षा में आकर्षण का केन्द्र बन गए थे।

स्कूल की छुट्टी होने तक उनकी मित्र मण्डली उस चमत्कार को स्वयं कर दिखलाने का निश्चय कर चुकी थी। रवि पुराना कपड़ा लाएगा, सत्ते माचिस लाएगा और पम्मी मिट्टी का तेल। चमत्कार का स्थान टीले के पीछे खंडहर में रखा गया।

शाम पाँच बजे तक सारी तैयारियाँ हो चुकी थी। पम्मी अपने को बहुत बहादुर मानता था और शेखी बघारते हुए उसने चाय अपने सिर पर बनवाने का बीड़ा उठाया। उसके सिर पर रवि ने पगड़ी रख दी, सत्ते ने उस पर मिट्टी का तेल डाला और ज्यों ही राजू ने दियासलाई हाथ में ली कि सारे बच्चे भागते नजर आए। इससे पहले कि राजू कुछ समझता किसी ने उसके हाथ से माचिस छीन ली और उसके कान उमेठने लगा। अब उसके कानों में देबू भईया की भारी आवाज पड़ी। राजू जोर–जोर से काँपने लगा और फिर रो पड़ा

देबू भइया कुछ पिघले। वे सारा माजरा तो समझ चुके ही थे और इन बच्चों की मासूमियत पर हैरान भी थे। उन्होंने राजू को प्यार से बैठाया। देबू भइया साइंस कालेज के मेधावी छात्रों में से थे। उन्होंने अन्य सब बच्चों को भी प्यार से पुकार कर अपने साथ ले लिया। पहले उनको मीठी–मीठी डाँट लगाई। फिर सारी बात विस्तार से समझाने लगे। उन्होंने पास में पड़ी घासफूस का पुतला बनाकर उस पर मिट्टी के तेल से भीगी

पगड़ी रखकर दियासलाई दिखा दी। फक् से पगड़ी समेत पुतला जलकर राख हो गया और बच्चे समझ गए कि कितना बड़ा खतरा टल गया था। देबू भइया ने कहा कि नकल के लिए अकल चाहिए। फिर बोले तुम सब घर चलो, वहीं सारी बात ठीक से बताएंगे।

उन्होंने एक पुराना कपड़ा लिया और उसे अच्छी तरह भिगोकर निचोडा। फिर उसमें गीले आटे का बड़ा सा गोला रख दिया। एक पुराने घड़े को उलटा करके उस पर कुछ घासफूस डाल दी और उस पर यह पगड़ीनुमा कपड़ा अच्छी प्रकार से रख दिया ताकि बाहर से अंदर आटा होने का कोई शक न हो। फिर एक और कपड़े को मिट्टी के तेल में भिगोकर पगड़ी के बीचों–बीच रख दिया ताकि तेल बाहर न टपके और चाय का सामान मंगाया। फिर दियासलाई से आग जलाकर गर्मागरम चाय सब बच्चों को बनाकर पिलाई। इतने में मम्मी ताजा गरम समोसे और पकौड़े भी ले आई। बच्चों ने देखा कि नीचे की घासफूस पर कुछ भी असर नहीं था, वह वैसी की वैसी ही थी।

देबू ने बच्चों को बताया, ''वास्तव में पहले मिट्टी का तेल जलता है फिर अंदर का कपड़ा। बाहर का कपड़ा चूंकि गीला होता है, अगर वह गरम होता भी है तो अंदर का गीला आटा उसे लगातार नमी देता रहता है और इतने में चाय तैयार हो जाती है और सिर तक गर्मी पहुँचती भी नहीं।''

देबू भइया ने अब सबसे कहा कि वे चाहें तो कागज के बर्तन में इस प्रकार पानी भी उबाल सकते हैं। अगले दिन स्कूल जाते हुए राजू और पम्मी उसी जगह पर भीड़ देखकर अपने बीते कल की मूर्खता पर मन्द–मन्द मुस्करा रहे थे।

***

देवी के जेवर

राधेपुर गाँव में दुर्गा देवी का बड़ा भव्य मंदिर है और अष्टमी के दिन वहाँ बड़ा मेला लगता है। मंदिर काफी पुराना भी है। इसीलिए उसका नाम भी खूब है। चढ़ावे में वहाँ हर वर्ष काफी रुपया आता है। एक बार एक सेठ ने दुर्गा माँ की मूर्ति पर बहुत से कीमती जेवरात चढ़ाये। जेवरों की कीमत आँकी गई तो लाखों में थी। इसीलिए वहाँ पर हर वक्त पहरा बैठा दिया गया। पहरा देने के लिए तीन चौकीदार थे जो आठ–आठ घंटे बारी–बारी से पहरा दिया करते थे। उनके नाम पदम, परमेश्वर और पोरू थे।

जेवर चढ़े दो महीने भी न बीते थे। एक दिन परमेश्वर की ड्यूटी थी। वह लघुशंका के लिए गया होगा कि इस बीच जेवरात चोरी हो गए। यह काम फुर्ती से किया गया था। अब तो काफी हंगामा खड़ा हो गया। गाँव की पंचायत बुलाई गई। परमेश्वर की पेशी हुई। उसने अपनी तरफ से सफाई दी। काफी माथा–पच्ची करने के बाद पंचायत किसी नतीजे पर नहीं पहुँची। तब मंदिर के पुजारी ने विनती की ''मैं अपने गुरू को बुलाऊँ तो आप लोगों को कोई आपत्ति तो नहीं है। वे जरूर ही इस समस्या को सुलझा देंगें। कारण ये है कि मैं समझता हूँ कि पुलिस में खबर करने से कभी कोई समस्या हल नहीं हुई है।'' पंचायत को भी कोई हल नहीं सूझ रहा था, इसलिए उसने पुजारी की बात मान ली। फिर अगर पुलिस में खबर देते तो गाँव की भी बदनामी होती। लोगों का मंदिर पर से विश्वास उठ जाता। मेले की रौनक भी कम हो जाती।

एक सप्ताह बाद मंदिर के पुजारी के गुरू जी आए। अरे ये क्या ? वे तो जिह्वा पर त्रिशूल धारण किए हुए थे। त्रिशूल उनकी जिह्वा के आर पार निकला हुआ था। पुजारी ने बताया– ''गुरू जी ने हिमालय में तपस्या की है और शिवजी के परम भक्त हैं। साक्षात शिव ने उन्हें स्वप्न में प्रकट

होकर यह त्रिशूल धारण करने को कहा है।'' गुरूजी ने पंचों को नमस्कार किया और पास ही बैठ गए। फिर गुरूजी ने पुजारी को कुछ इशारा किया। पुजारी बोले– ''गुरू जी ने कागज माँगा है और वे शिव के वरदान से चोर के नाम का प्रथम अक्षर निकालेंगे।'' गुरूजी ने पुजारी से सादा कागज लिया और सबको दिखाया कि वह बिल्कुल कोरा है। गुरूजी ने कागज को धरती पर रखा और आँखें बंद कर ली और दो मिनट के बाद आँखें खोली। फिर उन्होंने इशारे से एक जलता हुआ दीपक मँगाया। उन्होंने कागज को खोलकर दीपक की लौ पर गर्म किया। देखते–देखते उस कागज पर कुछ लिखा दिखाई दिया। पुजारी ने सबको दिखाया कि उस पर 'प' लिख था। पुजारी फिर जोर से चिल्लाया– ''हाँ–हाँ मुझे चौकीदारों पर ही शक था।'' संयोग से तीनों चौकीदारों का नाम 'प' से था। सरपंच बोला–'' 'प' नाम मे तो गाँव में पनिया भी है।'' तो पुजारी बोले– ''हाँ–हाँ उसको भी बुलवाओ।'' चारों लोगों की अब तो जैसे शामत आ गई।



पुजारी ने उनसे अपनी आँखें गुस्से से लाल करके बार–बार कहा– ''असली चोर खुद सामने आ जाए वर्ना अगर बाद में वह पकड़ गया तो उसकी खैर नहीं। जमीन–जायदाद सब मंदिर के नाम करके गाँव

से निकाल दिया जायेगा।'' परंतु कोई न बोला। अंत में पुजारी ने अपने गुरू से निवेदन किया कि वे ही कुछ करें। गुरूजी ने अपने कमण्डल से चार कौड़ियाँ निकालीं और चारों को एक–एक पकड़ा दी। पुजारी बोला– ''अब तुम कल इसी कौड़ी को लेकर आना। तभी फैसला होगा।'' फिर चारों को एक कोठरी में बंद कर दिया गया।

अगले दिन पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। पुजारी ने मंदिर के आंगन में एक चबूतरा बनवा रखा था। उसके गुरू जी पधारे और उन्होंने कमण्डल से निकाल कर भभूत अपने माथे पर लगाई और हाथों पर मल ली। पुजारी ने बताया कि यह पवित्र भभूत है। जिन पर चारों लोगों पर शक था उन्हें वहाँ बुलाया गया और चबूतरे के चारों कोनों पर बैठा दिया गया। गुरूजी के इशारे पर सबने अपनी–अपनी कौड़ी चबूतरे के कोने पर रख दी। गुरू जी ने सामने रखे जल भरे भगोने में हाथ डालकर चारों कौड़ियों पर छिड़क दिया। लोग हैरान थे कि गुरू जी के हाथ बिल्कुल गीले नहीं हुए थे। साथ ही साथ उन्होंने एक और करिश्मा देखा कि पनिया की कौड़ी स्वयं ही हिलनी–डुलनी शुरू हो गई। लोगों की आँखें फटी की फटी और मुँह खुले के खुले रह गए। पनिया को काटो तो खून नहीं। पुजारी ने उसकी खूब मरम्मत की और जब कुछ न मिला तो उसने कहा– ''कोई बात नही, गुरूजी तुझे ऐसी सजा देंगे कि याद रखेगा।''

उस दिन के बाद से पनिया कभी गांव में नहीं दिखा। हाँ गुरू जी कभी–कभी दर्शन दे जाते थे। पनिया के घर की तलाशी ली गई थी पर कुछ न मिला। उसका साजोसामान सब मंदिर के नाम हो गया था। इस बात को बीते छह महीने हो गए। उसके दो महीने बाद मेला होने वाला था। गुरूजी भी पुजारी की मदद को आए हुए थे। शनिवार का दिन था, भक्तों की काफी भीड़ थी। तभी पुलिस पनिया को हथकड़ी पहनाए लाती दिखी। इससे पहले लोग कुछ समझ पाते, कुछ सिपाही बड़ी फुर्ती से मंदिर में घुस गए। पुजारी मंदिर के बाहर ही था। पुलिस देखकर वह भागने लगाा पर पकड़ लिया गया।

लोगों ने पनिया को पुलिस की गिरफ्त में देखा तो उन्होंने सोचा कि

उसने कोई और चोरी की होगी तभी पकड़ा गया। परंतु जब पुलिस ने मंदिर के अंदर से गुरूजी को पकड़ लिया और बाहर पुजारी को, तो भक्तों की भीड़ बेकाबू हो गई। भीड़ पुजारी और गुरूजी को पुलिस से छुड़ाने की कोशिश करने लगी। तभी एक कांस्टेबिल ने गुरूजी का त्रिशूल खींच कर निकाल लिया। भक्तगण देखकर हैरान थे कि त्रिशूल जिसे वे गुरूजी जिह्वा के आर–पार हुआ समझते थे असल में हाथ की सफाई थी। वास्तव में त्रिशूल के मध्य में एक संकरा 'ट' जैसा मोड़ था। और गुरू जी अपनी जिह्वा उसमें फँसा लेते थे जिससे दूर से मालूम होता था मानो त्रिशूल जिह्वा के आरपार है। अभी भीड़ और पुलिस के बीच बहस चल रही थी कि तभी सेठजी वहां आ गए जिन्होंने मंदिर में जेवर चढ़ाए थे। उनके साथ उन जेवरों को बनाने वाला सुनार भी आया था। सेठ जी ने भीड़ को शांत करते हुए सारी बात बताई।

असल में जेवरों पर पुजारी की नीयत खराब हो गई थी। इसने अपने पुराने मित्र के लड़के पनिया को अपनी तरफ मिला लिया। पुजारी के बड़े भाई जो शहर में रहते थे वे भी उनके गुट में शामिल हो गए। तीनों ने मिलकर जेवरात गायब कर उनको बेच कर चैन से जीवन बिताने की सोची। पुजारी ने चालाकी से पनिया को चोर सिद्ध कर उसे जेवरों सहित वहाँ से भगा दिया। जब मामला ठंडा हुआ तो पुजारी ने पनिया को कहलवाया कि वह जेवरात धीरे–धीरे करके बेच दे। पहली बार जब कुछ जेवरात बेचे गए तो काफी कम पैसा मिला। अगली बार पनिया किसी दूसरे सुनार के पास गया जो कि मेरे साथ आए हैं। चूंकि ये जेवरात इन्हीं के बनाए हुए थे तो इन्होंने पहचान लिया। इन्हें कुछ शक हुआ। हम दोनों को दाल में कुछ काला लगा और हमने पनिया को कोठरी में बंद करके पुलिस के हवाले कर दिया।

पुजारी और गुरू के सिर शर्म से झुके थे। पनिया तो मानो धरती में गड़ गया था। परन्तु लोगों की समझ में तो गुरू जी के चमत्कार अभी भी न आ रहे थे। तभी लोगों ने देखा कि पुजारी की आँखो से आँसू बहने लगे, वह बोला– ''भगवान, तुम्हारा न्याय सबसे महान है। मैंने वर्षों इस

मंदिर में आपकी सेवा की परंतु न जाने कौन सी अशुभ घड़ी में मेरे मन में लालच आ गया और यह अनर्थ कर दिया।'' फिर उन्होंने स्वंय ही बताया– ''वो चमत्कार केवल विज्ञान की करामातें थीं। असल में कागज पर पहले ही नींबू के रस से 'प' लिख कर सुखा लिया गया था। सूखने पर वह दिखता नहीं था। जब कागज को आग दिखाई तो टारटरिक एसिड काला हो गया और कागज पर 'प' लिखा दिखाई दिया।'' फिर गुरू जी ने बताया– ''मैंने जो भभूत मली थी उसमें जिंक स्टीयरेट मिला था। जिंक स्टीयरेट त्वचा पर एक परत बना लेता है जिस पर पानी टिकता नहीं और अगर पानी में हाथ डालो, तब भी वे गीले नहीं होते।''

लोगों को असलियत का पता लग गया। परंतु कौड़ी वाली बात तो सबसे अधिक रहस्यमय थी। भीड़ में कोई चिल्लाया ''कौड़ी का रहस्य भी तो बताओ।'' पुजारी बोला– ''मैंने जमीन पर पनिया वाले खाने में पहले से ही सिटरिक एसिड का पाउडर मल रखा था। कौड़ी जो कि कैल्सियम कार्बोनेट से बनी होती है वह सिटरिक एसिड से प्रतिक्रिया करती है। गुरूजी ने जब उस पर पानी डाला तो सिटरिक एसिड पानी में घुल गया और उसने कौड़ी पर प्रतिक्रिया की। इसके फलस्वरूप कार्बनडाई–आक्साइड गैस निकली और उसके दबाव से कौड़ी हिलने लगी। पुजारी का गाँव से बहुत पुराना सम्बन्ध होने के कारण तथा उसके पश्चाताप को देखकर पंचायत ने कचहरी में जज से उसकी सजा में रियायत की प्रर्थना की। जज ने उनको एक–एक माह की कैद और पांच–पांच हजार रूपयों के जुर्माने की सजा दी।

अब मेला लगा तो सब कुछ पहले जैसा था। देवी पहले की तरह जेवरातों से सुशोभित थी और भक्तों की भीड़ तो पहले से कहीं ज्यादा थी।

***

नानू काका की बीमारी

काफी महीनों से नानू काका को हल्का ज्वर और खाँसी थी। उनकी खाँसी बढ़ती जा रही थी और कुछ दिनों से कफ में खून भी आने लगा था। गाँव के लोग मास्टर जी को बहुत मानते थे। नानू काफी महीनों से नानू काका को हल्का ज्वर और खाँसी थी। उनकी खाँसी बढ़ती जा रही थी और कुछ दिनों से कफ में खून भी आने लगा था। गाँव के लोग मास्टर जी को बहुत मानते थे। नानू काका का छोटा भाई भीखू, उन्हें मास्टर जी के पास ले गया। मास्टर जी ने तुरन्त एक बैलगाड़ी का प्रबन्ध किया। वह नानू काका को पास ही के गाँव के चिकित्सा केन्द्र में जाँच के लिए ले गए। वहाँ डाक्टरों ने भली प्रकार से जाँच करने के पश्चात काका को तपेदिक का रोगी बताया और इलाज के लिए छः महीने की दवा बताई इसके अलावा एक इंजेक्शन काका को रोज लगना था। मास्टर जी काफी होशियार थे और इंजेक्शन लगाना, पट्टी करना इत्यादि उन्हें अच्छी तरह से आता था। उन्होंने डाक्टर साहब से दवा ठीक से समझ ली और काका को घर तक छोड़ गए।

काका को इलाज से आराम होने लगा। परंतु ज्वर अभी भी था। रोज–रोज इंजेक्शन से उनको काफी भय लगता था। नानू काका और भीखू काफी अंधविश्वासी थे। पास के गाँव में एक साधु बाबा ने डेरा जमाया था। काफी नाम था उनका और तरह–तरह के चमत्कार दिखाते थे। भीखू उनके डेरे पर गया। वहाँ काफी भीड़ थी। बड़ी कठिनाई से उसे बाबा के दर्शन सुलभ हुए। शाम हो गई थी और अंधेरा होने लगा था। बाबा के पास एक टीन का लैम्प रखा था। बाबा चेले से बोले कि लैम्प में थोड़ा पानी डाल दे। पानी पड़ने के बाद स्वयं बाबा ने उसे दियासलाई से जलाया और पूरे कमरे में तेज प्रकाश फैल गया। चेलों ने बाबा का चमत्कार देखा कि मिट्टी के तेल की जगह बाबा ने पानी से लैंप जला

दिया। सबने एक स्वर में बाबा की जय का नारा लगाया और उपस्थित भक्तों ने भी जयकार का नारा लगाया। थोड़ी देर में रोशनी मंद होने लगी और लैम्प बुझने लगा। बाबा ने फिर पानी डाला और लैम्प ठीक से जलने लगा। भक्त जन तो बाबा की सिद्धि का लोहा मान गए और उनके पैरों में लोटने लगे।



भीखू भी बाबा से बहुत प्रभावित हो गया। उसने एक चेले को बाबा से अपनी समस्या बताने को कहा। बाबा ने उसे उसके गाँव आने का आश्वासन दिया। उन्होंने अगले इतवार का दिन शुभ दिन बताया। संयोग से उस दिन मास्टर जी को शहर जाना था। बाबा के इस कथन से भीखू सहज ही राजी हो गया।

इतवार को भीखू ने बाबा के कहे अनुसार सब इंतजाम कर रखा था। उधर मास्टर जी को कानोंकान खबर न थी। बाबा की दी हुई भभूति से नानू काका का ज्वर एक दम उतर गया था। बाबा के चर्चे तो गाँव भर में पहले से ही फैले ही थे। जैसे ही लोगों को पता चला कि बाबा नानू काका के यहाँ आए हैं, तो लोगों का सैलाब आ पहुँचा। बाबा ने कहा कि वे मुहूर्त की जाँच करेंगे। उन्होंने एक बीस पैसे का एल्यूमीनियम का सिक्का नानू काका के हाथ में रख दिया और एक मंत्र पढ़ा। फिर उन्होंने नानू काका से मुट्ठी बाँधने को कहा और खुद तरह–तरह के मंत्रों का

उच्चारण करने लगे। उन्होंने नानू काका से कहा कि अगर उनकी मुट्ठी गर्म हो जाये तो वे तुरन्त बतायें। नानू काका की मुट्ठी जैसे ही गर्म हुई वे झट से बोल पड़े। बाबा ने उनकी मुट्ठी खोल दी। अरे! ये क्या, सिक्के के बदले भभूत सी बन गई। बाबा बोले– ''मुहूर्त बहुत शुभ है।'' दर्शकगण आवाक थे। भीखू ने बाबा की जय–जयकार का नारा लगाया।

अब बाबा ने अपनी झोली से एक नारियल निकाला और नानू काका को पकड़ाया। उनसे कहा कि वे उसको पकड़कर अपने पूर्वजों और कुल देवताओं के नाम का उच्चारण करें। पांच मिनट बाद बाबा ने वो नारियल लेकर जोर–जोर से मंत्र पढ़ने शुरू किए। उन्होंने बताया कि नानू काका को एक बुरी आत्मा ने जकड़ा हुआ था जिसको कि बाबा ने उस नारियल में कैद कर लिया है। नारियल फोड़ने पर उस बुरी आत्मा का अंत हो जाएगा और नानू काका कुछ ही दिन में बिल्कुल भले–चंगे हो जाएंगें। बाबा ने नारियल को फोड़ दिया। अरे बड़ी हैरानी की बात थी, नारियल में से पानी के बजाय खून निकलने लगा।

अब तो नानू काका ने बाबा के पैर पकड़ लिए। उनसे दीर्घायु होने का आशीर्वाद माँगने लगे। लोग बाबा से काफी प्रभावित हो चुके थे। उनसे उसी गाँव में डेरा लगाने की प्रार्थना करने लगे। बाबा ने कहा कि वो केवल सच्चे भक्तों का ही इलाज करते हैं और अब उन्हें दूसरे गाँव जाना है। भीखू ने बाबा को दक्षिणा में ग्यारह सौ रूपये नकद दिए और उन्हें दंडवत् प्रणाम किया। बाबा हुंकार भरते हुए चेलों के साथ दूसरे गाँव को निकल गये।

अगले दिन जब मास्टर जी नानू काका को चिकित्सा केंद्र में दिखाने के लिए लेने आए तो काका ने वहाँ जाने से मना कर दिया। फिर मास्टर जी जब उन्हें इंजेक्शन लगाने लगे तो उसे भी न लगवाया। उनसे साधु बाबा की बात छुपाई गई। हफ्ता भर यों ही गुजर गया। नानू काका की तबियत फिर खराब होने लगी। उधर मास्टरजी से साधु की बात कब तक छिपती। उन्हें जैसे ही सब मालूम हुआ वे सारा माजरा समझ गए। फिर उन्होंने आकर नानू काका को बड़े प्रेम से सच्चाई बताई। परंतु काका

कहाँ मानने वाले थे, उल्टा उन्होंने मास्टर जी को ही भला बुरा कहना शुरू कर दिया। उन्हें नास्तिक इत्यादि न जाने क्या–क्या कहा। मास्टर जी के फिर से समझाने पर उन्होंने मास्टर जी को वहाँ से चले जाने को कहा। मास्टर जी भी धुन के पक्के थे उन्होंने कहा कि वे घर की शुद्धि के लिए कल तंत्र–मंत्र से हवन करेंगे। उन्होंने कहा कि हवन कुंड का इंतजाम मास्टर जी स्वयं करेंगे और बाकी इंतजाम भीखू करे।

अगले दिन मास्टर जी ने निश्चित समय पर हवन का सामान लगाया और मंत्र पढ़ने शुरू कर दिए। मास्टर जी द्वारा हवन करने की बात आस–पड़ोस में फैल गई थी और पड़ोसी इकट्ठा होने लगे थे। मास्टर जी ने दावा किया कि वे बिना दियासलाई के अपनी मानसिक शक्ति से हवन कुंड में ज्वाला प्रज्वलित करेंगे। उन्होंने पहले हवन सामग्री कुंड में डाली, फिर मंत्रोच्चारण के साथ शुद्ध घी की आहुतियाँ देने लगे। मंत्रों की गति बढ़ती जा रही थी और लोगों के देखते–देखते हवन कुंड में से आग स्वयं निकलने लगी। मास्टर जी का लोगों की नजरों में एक विशिष्ट स्थान तो था ही, अब तो वे उनकी निगाहों में और भी चढ़ गए।

बच्चों के माता–पिता अपने बच्चों को मास्टर जी के पाँव छूकर आशीर्वाद माँगने के लिए प्रेरित करने लगे। मास्टर जी मुस्करा दिए और बोले– ''तुम लोग बड़े भोले और नादान हो। तुमने शिक्षा नहीं प्राप्त की, इसलिए विज्ञान के विषय में अज्ञानी हो। मेरे द्वारा ये हवन और बाबा द्वारा किए गए क्रियाकलाप सब विज्ञान पर आधारित प्रयोग या हाथ की सफाई हैं। इन सब में दैवी शक्तियों या भगवान का कोई हाथ नहीं।'' लोग उनकी बात सुनकर विस्मित हो गए। अब मास्टर जी ने साधु बाबा की पोल खोलनी शुरू की।

मास्टर जी बिल्कुल तैयार होकर आए थे। उन्होंने सबसे पहले अपने थैले में से एक टीन का लैंप निकाला और भीखू से पानी लाने को कहा। लैंप में उन्होंने पानी डाला और फिर उसे दियासलाई दिखा दी। लैंप जलने लगा। लोग अचम्भित थे। जैसे ही लैंप बुझा, मास्टर जी ने उसे खोलकर दिखाया तो उसमें कुछ पत्थर के टुकड़े से पड़े थे। मास्टर जी

बोले– ''यह देखो, ये कैल्सियम कार्बाइड के टुकड़े हैं, इन पर पानी डालने से जो प्रतिक्रिया होती है उससे एसिटिलीन गैस पैदा होती है जो कि तेज चमक से जलती है। तुमने देखा होगा कि लैंप की लौ अलग तरह की थी। जब पानी खत्म हो जाता है, उसके डालने से फिर एसिटिलीन गैस बनती है और लैंप जलाया जा सकता है।''

''साधु ने नानू काका को जो 'भस्म' पवित्र राख कहकर खाने के लिए भिजवायी थी उसमें बुखार की दवा पीसकर मिलाई थी। चूंकि वह दवा स्वादरहित व सफेद होती है। भस्म की राख मिलकर उसका रंग और स्वाद बिल्कुल पता ही न चला।'' मास्टर जी ने इस प्रकार से पाखंडी साधु की दूसरी पोल खोली। काफी लोग मास्टर जी की बातें समझने लगे थे। फिर भी कुछ महा–अंधविश्वासी वहाँ पीछे ही भीड़ में खड़े थे और फुसफुसाकर बोल रहे थे– ''यह मास्टर, देख लेना सिक्के को भस्म नहीं बना सकता। अरे देखो तो कैसा कलियुग आ गया है, पहुँचे हुए महात्मा को पाखंडी बता रहा है। आजकल की शिक्षा ने तो लोगों को बिल्कुल ही नास्तिक बना दिया है, राम–राम घोर कलियुग आ गया है।'' मास्टर जी के कानों में ये बातें पड़ी तो उनके मुख पर मुस्कान आ गई। उन्होंने उन्हीं सज्जन को, जिनका नाम धीरू था, अपने पास बुलाकर बैठाया।

मास्टर जी ने अपने थैले से दो एल्यूमीनियम के और दो स्टील के सिक्के निकाले। फिर उन्होंने थैले से रंगीन घोल निकाला। ''धीरू काका अपने दोनो हाथ जरा फैलाओ।'' –मास्टर जी ने उनसे निवेदन किया। उन्होंने वह घोल धीरू काका के दायें हाथ पर लगा दिया। फिर उन्होंने धीरू काका के प्रत्येक हाथ पर एक एल्यूमीनियम का तथा एक स्टील का सिक्का रखा और उनसे हाथ बंद करने को कहा। फिर मास्टर जी ने मंत्र पढ़ने की बजाए एक फिल्मी गीत की दो लाइनें सुनाई। धीरू काका बोले ''मास्टर जी मेरे दायें हाथ में गर्मी सी हो रही है।'' मास्टर जी बोले– ''ठीक है अपने दोनों हाथ खोल दो।'' लोगों ने देखा कि बायें हाथ में स्टील का सिक्का साबुत है और दायें हाथ में एल्युमीनियम के सिक्के

की बजाय राख है। मास्टर जी ने उनसे भस्म फिकवा दी तथा तुरंत साबुन और पानी मंगाकर धीरू काका के हाथ धुलवाए।

अब मास्टर जी बोले – ''देखो, साधु ने एल्यूमीनियम का ही सिक्का लिया था। साधु ने अपने हाथ में मरक्यूरिक क्लोराइड द्रव लगा रखा था। एल्यूमीनियम मरक्यूरिक क्लोराइड से प्रतिक्रिया करता है और मुट्ठी बंद करने पर हवा के अभाव में जो प्रतिक्रिया करने से चूरा (एल्यूमीनियम क्लोराइड) बनता है वह गर्म होता है। इसीलिए मुट्ठी में गर्मी लगती है। स्टील का सिक्का मरक्यूरिक क्लोराइड से कोई प्रतिक्रिया नहीं करता इसीलिए साबुत रहता है।'' तभी भीड़ में से कोई चिल्लाया– ''और साबुन से हाथ क्यों धुलवाए?'' मास्टर जी ने उत्तर दिया– '' मरक्यूरिक क्लोराइड जहरीला होता है, इसीलिए यह राख भी जहरीली होती है और इसे खाना नहीं चाहिए और हाथ ठीक से धोने चाहिए।''

लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। और साथ ही साथ लोगों की उत्सुकता भी। अब मास्टर जी ने अगला प्रयोग शुरू किया। उन्होंने अपने थैले में से नारियल निकाला और भीखू को एक गाय का बछड़ा लाने को कहा। फिर वह नारियल उन्होंने बछड़े से बाँध दिया और कहा –''मान लो इसमें बुरी आत्मा आ गई है।'' फिर उन्होंने कुछ फिल्मी डायलाग बोले और नारियल लेकर फोड़ दिया। नारियल में से खून निकला, लोग हैरान थे। मास्टर जी बोले– '' देखो, पहली बात यह कि भूत–प्रेत नहीं होते। दूसरा, ये मंत्र पढ़ना सब ढोंग है। और तीसरा नारियल में ये खून नहीं बल्कि लाल स्याही है।''

मास्टर जी ने इसके बाद अपने थैले में से एक और नारियल, स्याही की दवात तथा एक सिरिंज (डाक्टरी–पिचकारी) व सुई निकाली। उन्होंने दिखाया कि किस तरह नारियल की एक आँख में, जोकि नर्म होती है, सुई डालकर सिरिंज में भरी स्याही उसमें डाल दी। और उन्होंने नये नारियल को भी फोड़ दिया। उसमें से वो ही लाल खून जो कि असलियत में स्याही था, निकला। मास्टर जी बोले– '' इसी प्रकार से आप किसी भी फल या सब्जी में लाल, नीली, काली कोई भी स्याही

या रंग का प्रवेश करा सकते हैं।''

अब तो मास्टर जी की बातें लोगों को समझ आने लगीं। वे समझ गए कि वह साधु वाकई में पाखंडी था। मास्टर जी जाने के लिए उठ खड़े हुए। तभी लोग बोले– ''मास्टर जी, हवन कुंड वाली बात भी तो बताते जाइए।''

मास्टर जी ने कहा– ''ओ हो वह तो मैं भूल ही गया।'' उन्होंने तुरंत एक कागज के कई टुकड़े किए और उसपर एक चूरा डाला और फिर 'घी' डाल दिया, देखते–देखते आग जल गई।

मास्टर जी बोले– ''ये जो 'घी' है ये चखकर देखो, ये असल में ग्लिसरिन है।'' उन्होंने एक गिलास पानी में वह चूरा मिला दिया तो पानी जामुनी रंग का हो गया।

पीछे से कोई बोला– ''अरे ये तो कुएँ की शुद्धि के लिए जल में डाला जाने वाला पोटेशियम परमेगनेट (लाल दवाई) लगता है।'' मास्टर जी बोले– ''शाबाश! बिल्कुल सही, ये पोटेशियम परमेगनेट ही है। पोटेशियम परमेगनेट और ग्लिसरिन आपस में प्रतिक्रिया करते हैं तो ऊष्मा पैदा होती है जिससे कागज या लकड़ी जल उठती है। अब तो लोग मास्टर जी के ज्ञान का लोहा मान गए और उन्हें उन्होंने अपने कंधे पर उठा लिया। नानू काका और भीखू अपनी बेवकूफी पर काफी शर्मिंदा थे। उन्होंने डाक्टर की दवा फिर से शुरू कर दी।

इस बात को अब नौ महीने हो गए हैं। अब नानू काका एकदम स्वस्थ हैं। यह तो उनका धैर्य, डाक्टर की दवा और मास्टर जी की लगन है जो वो आज का दिन देख पाए वरना उस धूर्त और पाखंडी साधु ने तो उनकी मृत्यु का द्वार ही खोल दिया था।

***

तस्करों का षड्यन्त्र

''प्रणाम, जमींदार साहब।'' –पत्तू दूर से बोला। जमींदार उसकी आवाज सुनकर रुक गए।

''कहो पत्तू कैसे आना हुआ, तुम तो केवल काम पड़ने पर ही नजर आते हो।'' –वे बोले।

पत्तू खिसयानी हंसी हंसते हुए बोला– ''साहब इतने पते की बात है कि वारे–न्यारे हो जायेंगे। आपकी दौलत कई गुना और बढ़ जायेगी।''

जमींदार को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। कड़क कर बोले ''तुम साफ –साफ क्यों नहीं बोलते।'' पत्तू घबरा गया और कांपती हुई आवाज में बोला– ''साहब, ये बातें तो एकांत में बताई जाती है। कहीं एकांत में चलिए ना।''

जमींदार का नाम रामदास है। वह कासू गाँव का जमींदार है। कासू गाँव नदी के किनारे बसा है। नदी के पार बांग्लादेश है और इस ओर हिन्दुस्तान है। नदी की बांग्लादेश वाली तरफ ऊँची पहाड़ी है, जिसपर घना जंगल है। हिन्दुस्तान की तरफ मैदानी इलाका है, जिसमें उपजाऊ भूमि है। बांग्लादेश की तरफ वाले इलाके में दूर–दूर तक कोई नहीं रहता। हिन्दुस्तान वाली तरफ नदी किनारे रल्दू के खेत हैं। उसके खेत नदी के किनारे काफी दूर तक गए है। फिर उसके बाद दुर्गम पहाड़ शुरू हो जाते हैं।

जमींदार पत्तू को अपने घर ले आए और उसे सारी बात विस्तार से बताने को कहा। पत्तू ने पहले उनसे यह वचन माँगा कि यह बात वे किसी से न कहेंगे चाहे पसंद हो या नापसंद। अगर उन्हें बात जँच जाए तो काम में कुछ हिस्सा पत्तू को भी मिला करेगा। जमींदार के 'हाँ' कहते ही पत्तू विस्तार से बताते हुए बोला– ''मेरा एक मित्र है जिसका काम सरहद पार से विदेशी सामान लाना है। अगर यह सामान बिना कर दिये

ही चुपके से ले आयें तो मुनाफा काफी होता है। नदी के पार बांग्लादेश में उसने काफी बड़ा गुप्त स्थान इस काम के लिए चुन लिया है। परंतु हमारे गाँव की तरफ उसे कोई ठिकाना नहीं मिल रहा है। अगर आप ये काम कर दें तो आपको इसका उपयुक्त कमीशन पहुँचा दिया जाएगा।'' जमींदार पत्तू की बात को सुनकर गंभीर हो गए। उन्होंने कहा – ''अरे यह तो गैर कानूनी काम यानी तस्करी है। पकड़े गये तो जेल हो सकती है।''

पत्तू जानता था कि जमींदार काफी काँइया किस्म का आदमी है और तीन–पाँच करेगा। उसे यह भी पता था कि जमींदार लालची हैं। उसकी इस आदत का फायदा उठा कर पत्तू ने अपना अगला तीर फेंका– ''साहब काम तो चुपके–चुपके अंधेरे में होगा और लाखों का फायदा है।''

जमींदार के मुँह में पानी आ गया। वह झटपट तैयार हो गया और बोला– ''ठीक है पत्तू तुम पूछकर बताओ उन्हें नदी के किनारे कौन–सा इलाका चाहिए।'' पत्तू जमींदार को सलाम ठोंकता हुआ खुशी–खुशी अपनी राह चल दिया।

उसी शाम पत्तू ने बताया कि उसके मित्र को एक जगह जो कि एंकात में है काफी पंसद है। जमींदार पत्तू के साथ वहाँ पर पहुँचा तो पता लगा कि वह जमीन रल्दू की है। जमींदार जानता था कि रल्दू काफी खुद्दार व्यक्ति है और आसानी से जमीन नहीं देगा। कोई और होता तो आसानी से डरा धमका कर जमीन हथियाई जा सकती थी। जमींदार जमीन को कब्जे में करने की उधेड़बुन में लगा था कि उसके मन में एक विचार कौंधा। उसने गाँव के ओझा को बुलवा भेजा और उसे हुक्म दिया कि उसे रल्दू की जमीन का कुछ हिस्सा चाहिए, उसके लिए कोई अच्छा सा उपाय निकाले। इस काम के लिए उसे मुँह माँगे दाम मिल जायेंगे।

ओझा ने अपना चक्कर चलाया। रल्दू और उसके पड़ोसी धीरु दोनों का एक–एक बैल अचानक मर गया। इस पर धीरू को भड़काने जमींदार का आदमी आया कि हो न हो रल्दू ने कुछ टोना–टोटका किया

होगा। इधर रल्दू भी काफी परेशान था और जब धीरू उस पर इल्जाम लगाता हुआ आया तो उसने सिर पीट लिया। और बात बढ़ गई। न्याय के लिए दोनों ने जमींदार के यहाँ गुहार लगाई। जमींदार ने कहा– ''चूंकि दोनों के ही बैल मरे है, इसमें किसी का दोष नहीं। यह जरूर कोई दैवी विपदा है।''

ओझा को बुलाया गया। ओझा बोला कि वह झाड़–फूंक करके ही कोई निष्कर्ष निकालेगा। उसने सबको अगले रोज आने को कहा।

अगले दिन ओझा ने आकर कहा – ''रात को मुझे देवी माँ ने दर्शन दिए। उन्होंने कहा कि वे शीघ्र ही अवतार लेगीं। यह भी कि उनका मंदिर स्थापित किया जाए वरना गाँव पर भयंकर विपदा आजायगी। बैलों का मरना तो अभी सिर्फ शुरूआत है। ओझा आगे बोला– ''रल्दू और धीरू ही अब इस गाँव को बचा सकते हैं।'' फिर ओझा ने दोनों को अपने पास बुलाया और अपने पास पड़ी एक कटोरी से हल्दी उठाने को कहा। उन दोनों को मुट्ठी बाँधने को कह कर ओझा कुछ मंत्र पढ़ने लगा। फिर अलग–अलग हाथ से उसने दोनों के हाथ में पड़ी हल्दी को छुआ तो रल्दू की हल्दी लाल हो गई जबकि धीरू की वैसी की वैसी रही। अब तो वहाँ उपस्थित लोग भोचक्के रह गए।

ओझा बोला– ''रल्दू, तुम्ही अब इस गाँव को बचाओ। तुम्हारे खेत में देवी का मंदिर बनना चाहिए। इसके लिए तुम्हारे खेत का निरीक्षण आज दोपहर को ही किया जाएगा और उपयुक्त स्थान देखा जाएगा।" रल्दू पहले तो मना करता रहा, किंतु गाँव–वालों और जमींदार के आगे उसे झुकना पड़ा। दोपहर को ओझा, जमींदार, रल्दू और पंचायत के कई लोग रल्दू के खेत पर गए। ओझा उसके खेत में सब जगह घूमता रहा। अचानक एक जगह उसके पाँव तले पानी जमा हो गया। ओझा बोला यही वह पवित्र जगह है। उसने वहीं डेरा डाल दिया। शाम तक काफी लोग रल्दू के खेत से अचानक थोड़ा सा पानी आ जाने से अचम्भित हो उस जगह को देखने आने लगे। जो भी आता उससे ओझा कहता कि एक लोटा पानी डालो। लोगों का

रात–दिन वहाँ मजमा लग गया और कीर्तन होने लगा।



दो दिन बाद अचानक उस जगह लगा कि धरती थोड़ी सी उठ गई है। और शाम तक एक सिर जैसे आकार का पत्थर का टुकड़ा बाहर दिखने लगा। ओझा ने कीर्तन और तेज कर दिया और पूजा करके वहाँ से मिट्टी हटाने लगा। उस जगह पर एक मूर्ति को देखकर लोग विस्मित हो गए। बात गाँव भर में फैल गई और पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। कुछ ही दिनों में वहाँ एक मंदिर बन गया और पत्तू उसका पुजारी। मंदिर चूंकि गाँव से कुछ दूर था इसलिए शाम को उसके द्वार बंद होते तो सुबह को ही खुलते थे। शाम के बाद मंदिर की तरफ कोई न जाता था।

रल्दू की समझ में कुछ भी न आया कि ऐसा क्यों हुआ ? फिर भी उसने अपने मन को समझा लिया और जमीन का एक हिस्सा खोने का गम भुला दिया। एक दिन शाम को खेत से घर लौटते समय काफी जोर का आँधी–तूफान आया। वर्षा से बचने के लिए रल्दू ने मंदिर में शरण ली। मंदिर का अहाता बड़ा करने के लिए रल्दू की काफी जमीन ले ली गई थी। सफाई न होने से उसमें ऊँची–ऊँची झाड़ियाँ उग आई थीं। बचता–बचाता रल्दू जब मंदिर के द्वार पर पहुँचा तो उसे कुछ लोगों की बातें करने की आवाज सुनाई दी– ''जल्दी–जल्दी सामान उतारो

बरसात हो रही है। ठीक से मंदिर के तहखाने में छुपा देना।'' रल्दू को हैरानी हुई कि यह सब क्या हो रहा है? वह छुपकर उन लोगों की गतिविधियाँ देखने लगा। थोड़ी ही देर में उसे समझ में आ गया कि यह सब तस्करी का सामान है। मौका लगते ही वह वहाँ से निकल गया और उसने थाने पहुँचकर ही दम लिया।

उसकी बात सुनकर इंस्पैक्टर ने आनन–फानन में पुलिस फोर्स के साथ आकर उस जगह को घेर लिया। लाखों रूपये के तस्करी के सामान के साथ नामी तस्कर पिंटू तथा जमींदार के कुछ आदमी पकड़े गए। इंस्पैक्टर काफी होशियार था। इससे पहले कि बात फैले, उनसे जमींदार का इसमें हाथ होने की बात उगलवा ली। रातोंरात जमींदार भी धर लिया गया।

अगले दिन समाचार पत्रों में यह खबर प्रथम पृष्ठ पर थी और इसका सेहरा रल्दू के सिर था। कोर्ट ने सभी लोगों को काफी जुर्माना तो किया ही साथ ही साथ कई बरस की कैद की सजा सुनाई। ओझा को अपनी पोल खुलती दिखी तो वह पहले ही रफूचक्कर हो गया। परंतु बाद में उसे भी गिरफ्तार कर लिया गया।

ओझा ने जज के आगे अपने करिशमों की सब पोल खोल दी। बैल मारने के लिए उसने एक तेज जहर का प्रयोग किया था। रल्दू के हाथ में हल्दी के लाल होने का कारण उसने बताया कि जिस हाथ से उसे छुआ गया था उसमें चूने का पानी लगा था, अन्य हाथ में नहीं। छूने से रासायनिक प्रक्रिया होने पर पीली हल्दी लाल हो गई।

रल्दू के खेत में एक जगह पानी अचानक आने का कारण पानी की एक विशेष नालीदार थैली थी। थैली को ऊपर पेट के पास लटकाया गया था। और उस में से निकली एक रबड़ की नली कपड़ों में छुपाकर टाँग के सहारे ओझा की जूती में चली गई थी। जूती की तली में एक सुराख में उस नली का मुख खुलता था। पहले से चुने हुए स्थान पर जाकर ओझा ने थैली को दबाया तो सारा पानी उसके पैरों के निकट निकलकर एकत्र हो गया। पहले से चुने हुए उस स्थान पर पिछली रात

को गड्ढा खोद कर चार–पाँच किलो चने डाल दिए गये थे। पानी डालने से चने भीग कर फूलने लगे। उनके ऊपर रखी देवी की मूर्ति जो कि मिट्टी से ढक दी गई थी नीचे से दबाव पड़ने से ऊपर की तरफ जाने लगी। फिर वह एक दिन मिट्टी की सतह से उभरकर ऊपर आ गई।

रल्दू ने इस सब कांड के बाद मंदिर को ज्यों का त्यों रहने दिया। सरकार ने रल्दू को, पुलिस को सूचना देने के लिए काफी भारी इनाम दिया। उस में से कुछ रुपयों से रल्दू ने गाँव में एक स्कूल खुलवा दिया। इसी के साथ गिरफ्तार हुए गाँव के लोगों के परिवार वालों को हर महीने के लिए कुछ रूपयों का प्रबन्ध भी कर दिया।

***

बाल जादूगर

अनूप बोला ''माँ, मुझे थोड़े पैसे दो। मैं बाजार से कुछ खाने के लिए लाऊंगा।'' अनूप बोला।

माँ मुस्कराकर पैसे देती हुए बोली– ''ध्यान से जाना और जल्दी घर आना। आज शाम को एक सगाई में जाना है।''

''हाँ–हाँ जल्दी आऊँगा।'' –कहकर अनूप दौड़ गया।

ड़फली के खनकने की आवाज सुनकर अनूप चौंक गया। अभी वह बाजार तक आया भी न था कि उसे मधुर स्वर में डफली सुनाई दी। डफली के खनकने की आवाज सुनकर अनूप चौंक गया। उसके कदम अनायास उधर चल दिए।

''आओ–आओ, बच्चों आओ देखो मैं जादूगर अनोखे कारनामे दिखाने आया। आओ, दौड़कर आओ खेल शुरू होने वाला है।'' एक तेरह–चौदह साल का लड़का भड़कीले लिबास में एक मेज पर कुछ सामान लगाए खड़ा था। ये शब्द उसी के थे। उसके अड़ोस–पड़ोस के कई बच्चों ने उत्सुकतावश उसे घेर रखा था।

जादूगर ने दो गुब्बारे रखे। मजमे में से वह किसी को खोजने लगा।

''अरे, हाँ शाबाश, हाँ तुम ही इधर आओ।'' –एक लड़के को उसने बुलाया और उसके हाथ में एक सलाई दे दी।

उस लड़के से जादूगर बोला– ''अब इस गुब्बारे को इससे छुओ।'' छूते ही फट् की आवाज के साथ ही गुब्बारा फूट गया।

''लाओ अब सलाई हमें दो'' जादूगर बोला वह सलाई लेकर मंत्र पढ़ने लगा। जैसे ही उसने दूसरे गुब्बारे को छुआ आशा के विपरीत उसे कुछ न हुआ। फिर उसने एक और बच्चे से सलाई से गुब्बारे को छुलवाया। फट्, और गुब्बारा फट गया। बच्चे ताली बजाने लगे।

अनूप चाह ही रहा था कि जादूगर उसे भी बुलाए, तभी जादूगर

ने उसे इशारा करके अपने पास बुलाया। अनूप दौड़कर वहाँ चला गया। जादूगर बोला– ''इस रुमाल को पकड़ो।'' फिर उसने उस पर एक द्रव डाल दिया। एक लड़के को बुलाकर उस रुमाल को दियासलाई दिखाने को कहा। फक् से आग लग गई। परन्तु आग लगने के बावजूद उस रुमाल को कुछ भी न हुआ। बच्चे जोर–जोर से ताली बजाने लगे।



फिर जादूगर ने एक जलती हुई दियासलाई मुंह में रख ली। दो मिनट बाद मुँह खोलकर बहुत सा धुआँ छोड़ा। फिर दियासलाई से कुछ सफेद–सी गोलियों को आग लगाई और खाने लगा। मुँह खोला, धुआँ छोड़ा। आग खाते देख बच्चे प्रसन्नता से शोर करने लगे।

'अब यह आखिरी आइटम है।' यह कहकर जादूगर ने मेज पर एक प्लेट, लोटा और चाकू रखे। फिर एक थैली से चावल निकालकर प्लेट में डाल दिए। फिर उसने चावल के ढेर पर चाकू खड़ा करने का प्रयास किया। चाकू बार–बार गिर जाता। उसने सारे चावल लोटे में भर दिए। फिर उसमें चाकू सीधा घुसा दिया और जैसे ही चाकू उठाया तो बच्चे हैरान रह गए जब उन्होंने देखा कि चाकू के साथ में लोटा भी उठ गया है। तमाशा बंद होते ही जादूगर ने कहा– ''जादू सीखने का कोई दाम नहीं, कल यही मिलेंगे'' और अपना सामान समेटने लगा।

बच्चों की भीड़ छँटते ही अनूप जादूगर से बोला ''भइया मुझे जादू

सिखाओ न।'' जादूगर बोला ''अगर तुम्हारे पास टाइम है तो मेरे घर चलो। वहां और भी नए जादू बताऊँगा।'' जादूगर समझ गया था कि अनूप जादू सीखने को काफी उत्सुक है। चुंबक की तरह खिंचता हुआ अनूप जादूगर के साथ चला गया।

''अजी सुनते हो, सगाई पर जाने का समय हो रहा है और अनूप बाजार से अभी तक नहीं आया। मुझे तो बहुत चिंता हो रही है।'' –अनूप की माँ ने उसके पिता से कहा।

''तुम बहुत जल्दी परेशान हो जाती हो, आ जाएगा, कहीं दोस्तों के साथ खेलने लगा होगा'' –उसके पिता बोले।

इस पर उसकी माँ भुनभुनाई– ''तुम्हीं ने उसे सिर पर चढ़ा रखा है।''

''अरे नाराज न हो, मैं उसे देखकर आता हूँ।'' –कहकर उसके पिता बाजार को चल दिए।

बहुत पूछने पर भी अनूप का पता न चला। टॉफी बेचने वाले से भी कुछ पता नहीं लगा। उन्होंने सोचा शायद अनूप घर वापस आ गया होगा और लौट गए। परन्तु अनूप घर नहीं आया था। होते–होते रात गहराने लगी पर अनूप नदारद था। ऐसा कभी न हुआ था कि अंधेरे से पहले अनूप न आया हो। आठ–नौ साल की नन्हीं सी जान कहां भटक रही होगी। बुरी–बुरी आशंकाओं से उसकी माँ का दिल काँप जाता था।

पुलिस में रिपोर्ट लिखाए महीना भर हो चला था परन्तु अनूप का कोई पता नहीं था। उसकी माँ ने रो–रो कर अपना बुरा हाल कर लिया था।

एक दिन अखबार में खबर छपी कि पुलिस ने एक बहुत बड़े गैंग को पकड़ा है जो कि जादू के तमाशे दिखाकर बच्चों को पकड़कर ले जाता था तथा उनको भीख, चोरी इत्यादि के लिए प्रयोग करता था। उससे भी सनसनीखेज बात यह थी कि बच्चों को न केवल अरब देशों में होने वाली ऊँटों की दौड़ के लिए बल्कि उनके शरीर से गुर्दा निकालकर प्रत्यारोपण तक के लिए प्रयोग किया जाता था। खबर के साथ पकड़े गए कुछ बच्चों के चित्र भी छपे थे। एक चित्र को देखते ही अनूप के पिता उछल पड़े। वह तुरन्त अनूप की माँ को लेकर पास के पुलिस थाने में

गए। वहां सूचना दी कि उनके बच्चे की तस्वीर अखबार में छपी है। पुलिस स्टेशन इंचार्ज ने दूसरे शहर के पुलिस अधिकारी से वायरलैस पर बात की साथ में अनूप के माता–पिता को एक सिपाही के साथ जीप से तुरन्त वहाँ के लिए रवाना कर दिया।

माता–पिता को देखकर अनूप की रुलाई फूट पड़ी। वह बिलख–बिलख कर अपनी दुर्दशा की कहानी सुनाने लगा– ''माँ, मैं जब उस जादूगर लड़के के साथ, जिसका नाम सुबु था उसके घर पहुँचा तो वहाँ मुझे शर्बत में कोई दवा डालकर बेहोश कर दिया गया। फिर मुझे ये लोग कई जगह ले गए। सब जगह कुछ बच्चे इनके लिए कोई न कोई काम करते थे, जैसे– चोरी, भीख मांगना आदि। इन्होंने मुझे जादू तो सिखाया पर जादू दिखाने के साथ–साथ मेरा काम था दूसरे बच्चों को बहला–फुसलाकर अपने साथ लाना। फिर उन बच्चों को तरह–तरह के कामों में लगाया जाता था। एक दिन जब मैंने भागने की कोशिश की तो, उन्होंने मुझे पकड़ लिया और बहुत मारा। दो दिन खाना भी नहीं दिया और कहा कि अगर मैं फिर से भागा तो आप लोगों को ये लोग जान से मार देंगे। मैं इसी डर से कि मेरे मम्मी पापा को ये मार न दें, मैं हमेशा इनका कहा मानता रहा। फिर, बस अब तो ये सब पकड़े गए। माँ, मुझे जोर से भूख लग रही है, कुछ खाने को दो।''

अनूप की माँ चुपचाप सब सुन रही थी। इतने मे अनूप के पिता बिस्कुट और नमकीन ले आए। अनूप ने अपने माता पिता को बताया कि कैसे उस जादूगर का जादू, झूठमूठ का जादू था।

शाम को अनूप ने आस–पड़ोस के कुछ बच्चों को एकत्र कर अपनी आपबीती सुनाई और उनको सावधान भी किया कि वे किसी भी व्यक्ति के बहकावे में आने की गलती न करें। फिर उसने उन सबको जादू यानी हाथ की सफाई दिखाकर उनका मनोरंजन तो किया ही साथ में उन्हें उसके पीछे छिपा रहस्य भी बताया।

अनूप ने कहा, गुब्बारे के पीछे की ओर यानी गुब्बारे की साइड जो कि जादूगर की तरफ होती है, गुब्बारे पर सेलो टेप का छोटा टुकड़ा लगा

रहता है और जादू दिखाने वाला बार–बार सलाई उसी स्थान पर लगाता है। चूंकि चिपकी हुई टेप उस क्षेत्र पर गुब्बारे का लचीलापन खत्म कर देती है, अतः गुब्बारा सलाई चुभोने से नहीं फूटता। किसी अन्य स्थान पर सलाई चुभोते ही वह फूट जाता है।

रुमाल पर डाला जाने वाला द्रव 1:6 के अनुपात से इथाइल अल्कोहल (EthylAlcohol) में इथानोल और जल का मिश्रण होता है। मिश्रण को आग लगाने पर इथाइल अलकोहल जलती है और उसमें मौजूद जल भाप बनने लगता है। चूंकि वाष्पीकरण से तापमान गिरता है इसलिए रुमाल पर ज्वलन तापमान नहीं पहुंचता और रुमाल को आग नहीं लगती।

आग खाने के खेल में जलने वाले कपूर की छोटी–छोटी गोलियाँ प्रयोग की जाती हैं। कपूर गर्म होने पर द्रव अवस्था की बजाय सीधे गैस अवस्था में परिवर्तित हो जाता है। जलाने पर ऊँची–ऊँची लौ देता है परन्तु त्वचा वगैरह आसानी से जला नहीं पाती और मुँह में रखने पर जब मुँह बंद किया जाता है तो आक्सीजन की कमी से शीघ्र बुझ जाता है।

और अंत में चावल भरा लोटा चाकू से उठाना भी हाथ की सफाई है। जब चावलों को दबा–दबा कर लोटे में ठूंसा जाता है तो चावल के दानों के बीच जगह बहुत कम हो जाती है। इतना होने पर जब चाकू उसमें घोंपा जाता है तो दानों और चाकू के बीच का घर्षण बल चावल भरे लोटे के भार से अधिक हो जाता है और लोटा आसानी से उठ जाता है।

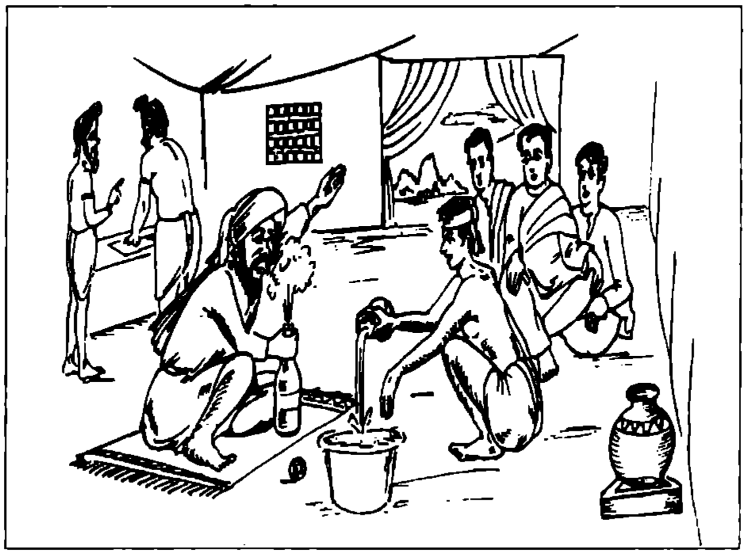
अनूप की बातें सुनकर उसके सारे दोस्त समझदार हो गए। उसके बाद कोई अपने काम से उनको मूर्ख बनाने की हिम्मत नहीं कर सका।

***

पढ़ाई ही पूजा है

दलपत एक बार फिर बारहवीं कक्षा की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया। उसके सभी साथी उससे दो–दो वर्ष आगे निकल गए थे। कोई डाक्टरी तो कोई वकालत पढ़ रहा था। परंतु दलपत को अपना भविष्य अंधकार पूर्ण दिखने लगा था। दोष उसी का था, गलत संगत में पड़कर सारा दिन आवारागर्दी करना उसका प्रिय काम हो गया था। इधर कुछ दिनों से वह हर मंगलवार को बिना किसी को बताए दो घंटे के लिए गायब हो जाता और जब आता तो उसके माथे पर एक तिलक होता। उसकी माँ दमयन्ती काफी परेशान थी कि एक तो वह विधवा है, और ऊपर से इकलौता किन्तु नालायक बेटा। अपनी तो जैसे–तैसे कट जाएगी परन्तु दलपत का क्या होगा। यह सोचकर वह दिन–ब–दिन कमजोर हुई जाती थी। परन्तु जब से दलपत तिलक लगाकर आने लगा उसने यही सोचा शायद दलपत की भक्ति ही उसे पार लगा दे।

दलपत असल में मंगलवार को एक साधु के डेरे पर जाया करता था। साधु ने उससे कहा था कि निरन्तर पूजा से उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाएंगी। शुरू में तो उसे साधु की बात पर विश्वास नहीं था, परन्तु एक दिन साधु ने कई भक्तों के सामने एक करिश्मा क्या कर दिया कि दलपत उसका परम्भक्त बन गया। हुआ यों कि साधु ने अपने चेलों से शोरे का अम्ल की बोतल मंगाई। उसने पास में पड़े ताँबे के तार पर थोड़ा सा तेजाब शीशे की पिपेट से निकाल कर डाल दिया। एकदम लाल भूरे रंग का धुंआं निकलना शुरू हो गया। इससे पहले कि कोई कुछ टिप्पणी करता साधु गटागट उस बोतल का सारा अम्ल पी गया परन्तु उसे कुछ भी न हुआ। साधु के इतने तेज तेजाब के बेधड़क पीने पर सब उसका लोहा मान गए। साधु बोला– '' देखा ! भक्ति और इच्छाशक्ति का असर। इससे असंभव भी संभव हो जाता है।''



दलपत साधु के पास नियमित रूप से जाने लगा, उसने साधु को अपनी समस्या बता दी थी। साधु हर मंगलवार उससे पन्द्रह से बीस मिनट पूजा कराता और एक गमले में रेत पर पानी छोड़ने को कहता था। साधु ने कहा था– '' इस रेत पर जब तुम शुरु–शुरु में जल की आहुति दोगे तो सारी रेत गीली हो जायेगी। जैसे–जैसे तुम्हारी भक्ति रंग लाएगी रेत का गीला होना कम होता जाएगा और एक दिन पानी डालने पर भी रेत बिल्कुल न भीगेगी।''

साधु के कहे अनुसार धीरे–धीरे रेत का भीगना कम हो गया। दलपत पानी डालता परन्तु रेत पहले की अपेक्षा कम भीगती। उसका कुछ हिस्सा पानी डालने पर भी सूखा रह जाता। उसका साधु की बातों पर विश्वास दृढ़ होने लगा। हर पूजा पर साधु पच्चीस रुपए दक्षिणा में लेता था।

परीक्षा के लिए अब तीन हफ्ते बाकी थे। उस दिन की पूजा के बाद जब दलपत ने रेत पर पानी डाला तो सारी की सारी रेत नहीं भीगी। उसने साधु को बताया तो, साधु बोले– ''शाबाश ! तुम्हारी लगन और भक्ति से ही यह संभव हुआ है। कल मैं तुम्हारी आखिरी परीक्षा लूंगा और फिर उसके पश्चात जो चाहोगे वही सिद्ध होगा।

'' दलपत अधीर होते हुए बोला– '' महाराज, उसके लिए मुझे क्या

करना होगा?''

'' कुछ नहीं यह एक नीबू ले जाओ और रात को अपने पास रखकर सोना। और हाँ मेरे लिए अंतिम दक्षिणा में इक्यावन सौ रुपए लाना न भूलना।'' ऐसा समझाते हुए साधु ने उसे विदा किया।

रास्ते भर दलपत यही सोचता रहा कि इतने पैसे वो कहाँ से लाएगा। उसे पता न चला कब घर आ गया। उसकी माँ की आवाज से उसका ध्यान टूटा– ''बड़ी देर कर दी बेटा। चल हाथ मुँह धोकर खाना खा ले।'' तभी उसकी नजर माँ के गले में लटकी सोने की चेन पर गई। उसे ध्यान आया कि माँ के संदूक में कुछ कीमती गहने रखे हैं, जो माँ ने आड़े वक्त के लिए रख छोड़े थे।

रात को उसने वे गहने चुरा लिए और सुबह गिरवी रखकर उसने महाजन से छह हजार रुपये कर्जा ले लिया। साथ ही महाजन से वचन ले लिया कि उसकी माँ को पता न लगे। महाजन वचन क्यों ना देता, सूद भी तो ज्यादा था।

अगले दिन उसको आते देख साधु मुस्कराया। उसने साधु को दंडवत प्रणाम किया। साधु बोला– ''अरे नत्थू जरा एक तेज चाकू तो ला और दलपत तुम यहाँ बैठ जाओ और वह नींबू मुझे दो।'' दलपत ने तुरन्त आज्ञा का पालन किया। साधु ने नींबू को आधा काटा और कुछ मंत्र पढते हुए उस नींबू को हवा में लहराया। फिर जैसे ही उसे दबाया आग के अंगारे निकले, यह देखकर दलपत स्तब्ध रह गया और वहाँ उपस्थित भक्तगण साधु की जय–जयकार करने लगे। साधु फिर उसे पूजा के लिए एक कोने में ले गया। वहाँ उसका तिलक कर उसे एक तावीज दिया तथा उससे दक्षिणा ले ली। साधु का आशीर्वाद लेकर खुशी–खुशी दलपत घर आ गया।

परीक्षा के अब केवल तीन सप्ताह रह गये। दलपत बेफिक्र होकर घूमता और पढ़ने वालों का मजाक उड़ाता। प्रथम परीक्षा के दिन परीक्षा भवन में जब उसने प्रश्न पत्र पढ़ा तो उसके हाथों के तोते उड़ गये। उसकी समझ में कुछ न आ रहा था कि क्या लिखे। पानी पीने के बहाने जाकर

उसने ठीक से जाँच भी लिया कि तावीज सुरक्षित है। परन्तु प्रश्नपत्र हल न कर पाने के कारण उसका मन उचाट हो गया। परीक्षा भवन से वह सीधा साधु के डेरे पर गया परन्तु साधु तो दो हफ्ते पहले ही अपने चेलों सहित प्रस्थान कर गया था।

परीक्षा का परिणाम निकला तो ढाक के तीन पात। दलपत फिर से फेल हो गया था। उधर उसकी माँ को घर में हुई जेवरातों की चोरी का पता लग गया था। परन्तु चोर का पता न लग रहा था। दलपत साधु को खोजने की सोच रहा था कि पड़ोस के दो और लोग जो साधु के झाँसे में आ गए थे उसे मिले। परंतु उसे उनकी बातों पर विश्वास न हुआ। उसी शाम उसके चाचा का लड़का दिनेश उससे मिलने आया। वह सांइस का स्नातक था। उसने जब दलपत को बहुत कुरेदा तो उसने सारी बात बताई। साधु की कारस्तानी समझ कर दलपत को सच्चाई बताई तो दलपत ने माथा पीट लिया। उसने तुरन्त माँ को सारी बातें बता दी और पैर पकड़कर माफी माँगने लगा। उसकी माँ के मन को सब कुछ सुनकर काफी ठेस पहुँची। पर क्या करती ? अंत में उसने यह सोचकर तसल्ली कर ली कि दलपत को आखिर अपनी गलती का एहसास हो ही गया, उसके लिए कुछ हजार ही तो गए। फिर बोली– "बेटा, जितनी लगन से तूने लगातार पूजा की, उतनी लगन से अगर तू पढ़ाई करता तो आराम से परीक्षा में पास हो जाता।" यह बात दलपत की समझ में आ गई और उसने मेहनत करने की ठान ली।

शाम को चाचा के लड़के दिनेश ने उसे साधु की कारस्तानी से अवगत कराया– "देखो भाई साहब ! साधु ने पूरी बोतल में जो कि गहरे रंग की थी सादा पानी भरा हुआ था। उसने बोतल के बाहर थोड़ा तेजाब धब्बों की तरह केवल दिखावट के लिए लगाया था। फिर उसने एक गिलास की पारदर्शी (पिपेट नली) ली और उसे तेजाब से रबड़ की डॉट लगाकर भर लिया। उस पिपेट को उसने बोतल में डाल दिया। डॉट लगा होने से पिपेट का तेजाब उसी में रहा। बोतल अपारदर्शी होने से उसके अंदर भरा पानी बाहर से दिखाई नहीं दे रहा था। साधु ने दिखावे के

लिए पिपेट का सारा तेजाब ताँबे की तार पर डाल दिया और पानी जिसको कि तुम लोग तेजाब समझ रहे थे पी गया।'' यह सुनते ही दलपत को लगा जैसे किसी ने उसको तमाचा मारा हो। उसे अपनी नासमझी पर आत्मग्लानि होने लगी।

''अच्छा, नीबू से आग निकलने का रहस्य भी तो बता बेटा।'' –तभी दमयन्ती ने दिनेश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा। दिनेश ने अपनी जेब से छोटी सी पुड़िया निकाली जो वह दोपहर को बाजार से लाया था। उसमें एक छोटी सी डिब्बी थी जिसके अंदर किसी द्रव में एक धातु का टुकड़ा पड़ा था।

''ताई जी एक नीबू तो लाइए'' –दिनेश ने कहा। दमयन्ती ने नीबू लाकर दे दिया। नींबू को दिनेश ने काटा और फुर्ती से डिब्बी में पड़े धातु के टुकड़े को नींबू के हिस्सों में डालकर दबाया तो आग की लपटें निकलीं। दमयंती दाँतों के बीच उँगली दबाकर बोली ''ये क्या करिश्मा है?'' दिनेश बोला ''यह कोई करिश्मा नहीं,बल्कि सांइस की करामात है। धातु का 2टुकड़ा काफी ज्वलनशीन पदार्थ शुद्ध सोडियम है, चूंकि हवा में आग पकड़ सकता है इसीलिए इसे तेल में रखा जाता है। नींबू के बीच रखने पर जो रासायनिक क्रिया होती है उससे आग की लपटें निकलती हैं।''रेत वाला कमाल कैसे हुआ?''– दलपत अधीर होते हुए बोला। दिनेश ने कहा कि थोड़ी रेत, मोमबत्ती और लोहे का कोई बेकार डिब्बा लेकर रसोईघर में चलो। तुरंत सारा समान इकट्ठा हो गया। दिनेश ने रेत को डब्बे में डालकर आंच पर खूब गर्म किया और मोम को खुरचकर उसका बुरादा बनाकर रेत में मिलाता गया। फिर उसने मोम मिलाई हुई रेत और बिना मोम मिली रेत की ढ़ेरियाँ बनायीं। जब दोंनों पर पानी डाला तो मोम वाली रेत नही भीगी, बिना मोम वाली भीग गई। दिनेश बोला– ''देखा तुमने, मोम की परत चढ़ने से रेत के कण पानी से नहीं भीगते।

साधु हर बार तुम्हारी रेत में मोम वाली रेत की मात्रा बढ़ा देता था जिससे रेत का भीगना निरंतर कम होता जा रहा था।'' यह जानकर दलपत की आँखें खुल गई उसने दिनेश को गले लगा लिया। उसने कसम

खाई कि अब कभी ऐसे ढोगों के चक्कर में नहीं आएगाा। उसने लगन से पढाई शुरू की। इससे अगली परीक्षा उसने अच्छे अंकों से उत्तीण कर ली। इसके बाद उसे इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला मिल गया।

***

लक्ष्मी का विवाह

''दीपू की अम्मा। ओ दीपू की अम्मा।''–रामो घर में घुसते हुए बोली। ''अरे, आओ–आओ रामो आओ। क्या बात है? क्यों सुबह–सुबह जोर–जोर से बोल रही हो बीसो ने कहा–?''

''क्या है बीसो तुम्हारे भले की ही बात करने आई हूँ और तुम मुझ पर ही बरस रही हो''

बीसो बोली– ''अरे, बुरा मान गई, जरा सा मजाक कर दो तो तुम तो मुँह फुला लेती हो।''

रामो बड़बडाई– ''अब तुम अपनी बात बंद करो तो काम की बात कहूँ, नहीं तो मुझे भी अभी काफी काम करने है।''

मुस्कराकर बीसो बोली– ''अरे दीदी बताओ तो क्या बात है?''

''तो ध्यान से सुनो। कल लखनपुर से बहुत पहुँचे हुए तांत्रिक आ रहे है। तुम अपनी लक्ष्मी के लिए तीन बरस से हाथ पाँव मार रही हो परंतु अभी तक शादी की बात पक्की नहीं हुई। तुम उनसे मिल लो तो सारे कष्ट दूर हो जायेगें।'' –रामो ने बीसो को समझाया। बीसो को तो यह कहकर रामो चली गई, परंतु बीसो को इन तांत्रिकों में कोई विश्वास नहीं था। दिन भर बीसो यही सोचती रही कि अगर आज लक्ष्मी के पिताजी जिंदा होते तो शायद यह नौबत नहीं आती।

बीसो अपनी लड़की को कब तक घर पर बिठाए रखती। इसी चक्कर में उसका बड़ा भाई बिन ब्याहे ही बत्तीस साल का हो गया था। हार मानकर अगले दिन वह तांत्रिक से मिलने चली गई। रामो के घर में तांत्रिक की खूब सेवा हो रही थी। रामो के काफी रिश्तेदार भी अपनी–अपनी समस्याएं लेकर आए हुए थे। रामो ने बीसो को तांत्रिक से अकेले में मिलावा दिया। तांत्रिक ने उसकी पूरी बात ध्यान से सुनी।

फिर बोला– ''ठीक है, काली माँ सब ठीक करेंगी। ये नारियल ले

जाओ संभालकर बच्ची के सिरहाने रखना। नारियल और बच्ची को लेकर कल ठीक आठ बजे मेरे डेरे पर आ जाओ। याद रहे वहाँ केवल स्त्रियों का ही काम है, अब जाओ।'' बीसो उनको प्रणाम करके घर आ गई। तांत्रिक महाराज उसे काफी गंभीर किस्म के व्यक्ति लगे इसीलिए उनसे दक्षिणा पूछने की हिम्मत न हुई।

बीसो ने घर आकर नारियल के विषय में लक्ष्मी को सब कुछ समझाया। फिर खासतौर पर हिदायत दी कि अपने दीपेश भैया को इस बारे में कुछ न बताए। दीपेश आधुनिक विचारों का लड़का था। इस तरह के टोने–टोटकों में उसे रत्ती भर भी विश्वास न था। और धर्म–कर्म के नाम पर होने वाले झूठे ढोगों से वह कोसों दूर ही रहता था।

अगले दिन लक्ष्मी अपनी माताजी के साथ तांत्रिक के यहाँ गई। तांत्रिक के यहाँ लोगों का तांता लगा था। परंतु तांत्रिक ने उन्हें जल्दी बुला लिया। तांत्रिक ने लक्ष्मी को एक आसन पर बैठा कर उसे नारियल अपनी गोद में रखने को कहा।

फिर कुछ मंत्र पढ़ कर बोला– ''आँखे बंदकर सामने बैठी देवी का स्मरण करो।'' फिर उसने नारियल फोड़ दिया। नारियल के फूटते ही कमरा बदबू से भर गया, सबने देखा कि नारियल में गोबर भरा था।



तांत्रिक क्रोध से भर गया और जोर से बोला– ''ओ अभागी लड़की, देवी तुझ से बहुत रूष्ट है तुझे उसे मनाना होगा। मै तुझ पर पवित्र जल छिडकता हूँ और उसी जल से तेरा तिलक करता हूँ। नाक रगड़कर देवी से माफी मांग, शायद देवी प्रसन हो जाएं।'' तांत्रिक ने 'अलख़–निरंजन' की हुँकार लगाकर लक्ष्मी पर जल छिड़का और उसी जल से उसकी नाक की नोक से लेकर माथे तक एक टीका लगाया। उसके पश्चात देवी के चरणों में तांत्रिक ने चाकू से एक गोला बनाया और वहाँ नाक रगड़ने का आदेश दिया। लक्ष्मी, देवी की मूर्ति के पैरों के नजदीक लकड़ी के पटरे पर नाक रगड़ कर क्षमा मांगने लगी। इक्कीस बार नाक रगड़ने पर तांत्रिक ने लक्ष्मी को सिर उठाने को कहा। अरे यह क्या, पटरे पर लाल रंग का कोई अक्षर उभर आया था। तांत्रिक ने पटरा उठाकर पढ़ा और दिखाया कि उस पर 'रा'लिखा था। तांत्रिक प्रसन मुद्रा में बोला– ''अरे भाग्यवान लड़की ! देवी तुझ से प्रसन्न हो गई है और दो सप्ताह के अन्दर ही 'रा' अक्षर से शुरू होने वाले नाम के लड़के का रिश्ता तुझे आएगा। उससे पहले मैं तेरे घर पर शुभ लक्षण देखना चाहता हूँ। ये एक और नारियल ले जा और कल मैं तेरे घर आऊंगा।'' बीसो तो तांत्रिक से काफी प्रभावित हो गई और तांत्रिक के चरण छूकर घर आ गई।

बीसो ने दीपेश को कुछ भी न बताया। तांत्रिक को उस समय आना था जब दीपेश दफ्तर में होगा इसलिए उसे कुछ भी मामूल न होगा। बीसो को लगा कि इतने दिनों की आस पूरी होने को है। और कहीं दीपेश उसमें अड़चन न डाल दे। उन्होंने दीपेश के बूढ़े चाचा को बुलवा लिया। अगले दिन तांत्रिक आए और थोड़ी पूजा के पश्चात उन्होंने नारियल मंत्र पढ़कर फोड़ दिया, बीसो देवी मन ही मन घबराई हुई थी कि कहीं निराशा न हाथ लगे। परंतु नारियल के फूटते ही वे स्वयं अंचभित रह गई जब उसमें से रात की रानी के नन्हें–नन्हें ताजे फूल निकले। उनकी आँखों से दु:ख मिश्रित प्रसन्नता के आँसू बह निकले और उन्होंने तांत्रिक के पाँव पकड़ लिए। तांत्रिक आशीर्वाद देते हुए बिना दक्षिणा लिये चले गए।

अभी इस सब को हुए दस दिन भी न बीते थे कि लक्ष्मी के लिए

एक रिश्ता आया और संयोग से लड़के नाम राजेश था। बीसो देवी को तांत्रिक की बात याद आ गई। उन्होंने तुरंत दीपेश के चाचाजी को बुलवा लिया। बातों से लगा रिश्ता अच्छा है। लड़का एक प्राइवेट फर्म में काम करता था।

रिश्ता लड़के के मामा सरनदास लाए थे। बीसो बोली– ''सरनदास जी हमें रिश्ता तो बहुत पंसद है। लड़के का कोई चित्र हो तो दिखलाइए।'' चित्र देखने के पश्चात बीसो और दीपेश के चाचा इस रिश्ते के लिए तैयार हो गए फिर बोले– ''सरनदास जी, हमें रिश्ता मंजूर है परंतु अपने लड़के से सलाह करना चाहते है।'' वे बोले– ''हाँ–हाँ क्यों नहीं। हमें जल्दी नहीं और हमें भी यह रिश्ता पंसद है।''

रात को दीपेश को तांत्रिक वाली बातें छुपाकर रिश्ते के विषय में बताते हुए

बीसो बोली– ''बेटा दीपू आज लक्ष्मी के लिए बहुत अरसे के बाद एक अच्छा रिश्ता आया है। तेरे चाचा ने भी लड़के वालों से बातचीत कर ली है। सब कुछ पूछने के बाद हमें ये रिश्ता बहुत अच्छा लगा है। हमें तो तेरी रजामंदी चाहिए। लड़के का पता मेरे पास है, इसे लेकर चाहे तो तू लड़के से मिल आ।'' दीपेश बोला– ''माँ, जब बड़े सब कुछ ठीक समझते हैं तो बहुत ही अच्छा है, मैं कल ही उस लड़के से मिल आऊँगा।''

दीपेश ने अगले दिन शाम को माँ को अपनी रजामंदी दे दी। लड़के वाले शादी की जल्दी में थे। उन्होंने कहा कि दान–दहेज नहीं चाहिए और आर्यसमाज में सादे ढंग से शादी करेगें। बस फिर क्या था हफ्ते भर में लक्ष्मी डोली में बैठकर अपने पिया के घर चली गई। शादी हुए दो महीने ही हुए थे कि राजेश ने इत्तला भेजी कि उसे दूसरे शहर में नौकरी मिल गई है और वह वहाँ शीघ्र ही चला जाएगा। इस पर बीसो बोली– ''अरे हमारी बेटी तो बड़ी सुखी है। इस शहर में रहे या दूसरे में, क्या फर्क पड़ता है।''

लक्ष्मी को गये एक महीना हो गया था। नये पते पर डाले पत्रों का कोई जवाब नहीं आया तो बीसो को चिन्ता हुई। उसने दीपेश से अपनी

परेशानी बताई, तो उसने बात हंसी में टाल दी। इस प्रकार एक और महीना बीत गया। अब तो बीसो और दीपेश दोनों को ही कुछ खटका लगा। दीपेश अगले रविवार को ही लक्ष्मी के नये पते पर चल पड़ा। दूसरे शहर पहुँचने पर मालूम हुआ कि पता गलत था। अब तो दोनो घबरा गए। चाचा जी से सलाह की गई। लड़के के साथ जो उसके रिश्तेदार रिश्ता करने आऐ थे उनको उनके दिए पते पर खोजा गया। वो वहाँ शादी के अगले दिन से ही घर छोड़कर अन्यत्र चले गये थे।

अब तो घर में बहुत चिन्ता हो गयी कि लक्ष्मी कहाँ और कैसी है? दीपेश ने बीसो से पूछा– ''आपने तो सबकुछ देख–पूछ लिया था। फिर आपको तो पता होगा कि लक्ष्मी को ठीक जगह व्याह रहे हैं कि नहीं?'' बीसो निरूत्तर थी। अंत में उसने तांत्रिक वाली सारी बातें दीपेश को बता दी। दीपेश ने अपना माथा पीट लिया। उसे लगा कि दाल में कुछ काला है। उसने पुलिस में खबर करने से पहले रामो चाची से मुलाकात की। रामो चाची ने उसे अपना दुखड़ा सुना दिया कि तांत्रिक उनसे दस हजार रूपए ले गया परंतु उनकी किसी समस्या का समाधान न हुआ। तांत्रिक इसी प्रकार कई लोगों को चूना लगा कर नदारद हो गया था।

दीपेश को घर की बदनामी का डर लगा। उसने एक पुलिस इंसपेक्टर दोस्त को अपनी परेशानी बताई। उसने दीपेश से लक्ष्मी और राजेश का चित्र माँगा। चूंकि शादी सादे तौर पर हुई थी इसलिए राजेश का चित्र दीपेश के पास नहीं था। इंसपेक्टर ने पुलिस रिकार्ड में नामी बदमाशों के चित्रों की एक एलबम रामो और बीसो को दिखाई। एक चित्र तांत्रिक से काफी मिलता–जुलता था पर उस व्यक्ति के दाढ़ी थी जो तांत्रिक के नहीं थी। उसी चित्र को परिवर्तित करने पर वह हूबहू तांत्रिक जैसा लगा। पुलिस रिकार्ड जाँचने पर वह नामी ठग निकला।

इधर किसी काम से दीपेश को किसी अन्य शहर जाना पड़ा। वहाँ पर अचानक उसे राजेश दिखाई दिया और जैसे ही उन दोनों की आँखें चार हुई राजेश एकदम भागकर भीड़ में खो गया। दीपेश का शक पक्का हो गया उसने तुरंत पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखाई। पुलिस ने शहर के

सभी खास स्थानों व बस स्टेशनों पर लक्ष्मी की और तांत्रिक की तस्वीरों सहित पुलिस कांस्टेबलों की ड्यूटी लगा दी। अगले ही दिन पुलिस ने एक वैन में सवार दो लड़कियों सहित तांत्रिक व राजेश को गिरफ्तार कर लिया। वे सब अपना साजो–समान लेकर शहर से रफूचक्कर होने वाले थे। पर लक्ष्मी का कहीं पता नहीं लगा। पहले तो राजेश दीपेश को पहचानने से इंकार करता रहा पर थोड़ी सी मार के बाद तांत्रिक और राजेश ने सारी बात बताई।

''हम लोग हसनपुर के रहने वाले हैं और बाप–बेटे हैं। यानी राजेश मेरा बेटा है। मैं तांत्रिक के वेश में लोगों को ठगता हूँ और मौका मिले तो राजेश की शादी किसी कुवांरी लड़की, जिसके माँ–बाप परेशान और भोले–भाले हों, करा देता हूँ। इस प्रकार राजेश पाँच शादियाँ कर चुका है। इस तरह से मिली लड़कियों से फिर हम व्याभिचार कराकर पैसा कमाते हैं।'' इंस्पेक्टर ने लक्ष्मी के विषय में पूछा तो, तांत्रिक बोला– ''उस लड़की को हम कैसे भी मजबूर न कर सके और अंत में तंग आकर उसे एक मकान में बंद किया हुआ है।'' लक्ष्मी का पता लगते ही उसे उनकी कैद, से छुड़ा लिया गया। लक्ष्मी माँ और भाई को देखते ही फूट–फूट कर रो पड़ी।

इंसपेक्टर ने अन्य दो लड़कियों को भी आजाद करा लिया। वे लड़कियाँ तांत्रिक के कोठे पर धंधा करने लगी थी। तांत्रिक के पास से काफी चल अचल संपत्ति मिली।

लोगों को तांत्रिक की शक्तियों पर विश्वास था। उन्हें अभी भी लग रहा था कि तांत्रिक बड़ा सिद्ध–पुरूष था परन्तु उसने अपनी विद्या का दुरूपयोग किया है। तब इंसपेक्टर ने तंत्र–मंत्र की हँसी उड़ाते हुए तांत्रिक की पोल खोलनी शुरू की।

इंसपेक्टर ने बताया कैसे नारियल की तीन आँखों में से एक को फोड़कर उसका सारा जल निकाल कर कुछ भी भरा जा सकता है, जोकि उस छिद्र में से समा जाए। और उस छिद्र को कीचड़ आदि (जोकि नारियल के मटमैले रंग से मिलती है) से बन्द कर दिया जाता है।

तौलिये पर लाल रंग आने का कारण रासायनिक प्रक्रिया है। फेरिक क्लोराइड के घोल से कुछ भी लिख दो। यह लिखाई अदृश्य होती है। फिर सोडियम थायोसायनेट का जलीय घोल (यह भी रंगहीन होता है) लो और फेरिक क्लोराइड लगे स्थान पर लगाओ। दोनों की प्रक्रिया से लाल रंग उभर आएगा। इस प्रकार फेरिक क्लोराइड से लिखा कोई भी अक्षर जोकि अदृश्य है सोडियम थायोसायनेट से मिलते ही लाल रंग का दिखने लगेगा। तभी लक्ष्मी के तिलक लगाने के बाद नाक रगड़ने से पटरे पर लाल अक्षर उभरे थे।

तांत्रिक और उसके लड़के तथा उसके अन्य साथियों को न्यायलय ने कड़ी सजा दी।

***

संतान की चाहत

दिवाकर और उसकी पत्नी के कोई सन्तान न होने से उन्हें घरवालों और अड़ोस–पड़ोस के लोगों के ताने सुनने पड़ते थे। एक दिन तो हद ही हो गई जब उसकी माँ ने उसे दूसरी शादी करने की सलाह दी। तब उसने अपनी माँ को डाँटा–''इसकी जगह तुम्हारी बेटी होती, तब भी तुम क्या यही सलाह देती अपने दामाद को? बड़े भइया के दो बच्चे तो हैं, तुम्हारा मन बहलाने को ऐसी क्या कमी है। समय आने पर सब ठीक हो जाएगा।''

'मुझे क्या पड़ी है जो नेक सलाह दूँ और बुरी भी बनूँ। तेरा ही कोई नाम लेने वाला नहीं होगा।''– दिवाकर की माँ बोली।

बस–बस अब तुम अपनी ये सलाह अपने पास रखो।'' दिवाकर तैश में आकर वहाँ से चल दिया।

दिवाकर और उसकी पत्नी रानी, रोज–रोज के इन तानों से परेशान हो गए थे। एक तो वैसे ही रानी की तबियत खराब रहती थी ऊपर से उसकी सास और पड़ोस की बड़ी–बूढ़ियों की छींटा–कशी ने उनके मन का चैन छीन लिया था।

एक दिन दफ्तर से आकर दिवाकर ने घर में कदम रखा ही था कि उसकी माँ कम्मो का मधुर स्वर उसे दूसरे कमरे से सुनाई दिया।

''बेटी रानी, आज मेरे साथ मंदिर चल वहाँ एक बाबा आए हैं और सबकी मानोकामना पूरी करते है। हो सकता है, हम सबकी मुराद पूरी हो जाए और तेरी गोद भी भर जाए।'' यह सुनकर पहले तो दिवाकर का माथा ठनका, फिर यह सोचकर उसने उन्हें टोका नहीं कि शायद उसकी समस्या हल हो जाए और इसमें उसका जाता भी क्या है।

मंदिर के बाहर ज्यादा भीड़ नहीं थी क्योंकि बाबा आज ही पधारे थे और भक्तगणों तक खबर पहुँचने में समय तो लगेगा ही। कम्मो और

रानी का नम्बर शीघ्र आ गया। उन्होंने बाबा को प्रणाम किया। बाबा ने हवा में आशीर्वाद की मुद्रा में खाली हाथ लहराया और जैसे ही कुछ देने की मुद्रा में हाथ किया तो खाली हाथ से कुछ भभूत रानी के हाथ में गिरी। ''बेटी ये भभूत चाट लो। इसके बाद तुम जो भी बात कहोगी उसका समाधान आसान हो जाएगा।'' –साधु बोला। रानी ने भभूत चाट ली।

फिर रानी आँखों में आँसू भरकर झोली फैलाकर बोली – ''मुझे तो केवल एक बच्चे की लालसा है। बाबा लड़का या लड़की, कोई भी हो। ''

'' ठीक है, घबराने की कोई बात नहीं, काली माँ सब ठीक कर देंगी। अरे श्याम जरा वो पीला तौलिया और पवित्र जल लाना।'' –साधु बोला। ''ले बच्ची, इस जल से हाथ धो और देवी को प्रणाम कर।'' – ऐसा कहकर बाबा कुछ मंत्र पढ़ने लगा।



''और अब इस तौलिये से अपने हाथ पोंछ लें।''–बाबा ने रानी को अगली हिदायत दी। तभी सभी उपस्थित लोग सकते में आ गये जैसे ही उन्होंने ने देखा कि जहाँ–जहाँ रानी ने हाथ पोंछा था वहाँ–वहाँ तौलिया लाल हो गया है।

बाबा गम्भीर स्वर में बोला –''बेटी तेरी समस्या तो काफी बड़ी है और इसके लिए काफी कठिनाई आएगी। फिर भी तू हिम्मत न हार, बाबा

तेरी हर तरह से मदद करेगा। तू स्वंय देख ले कि तेरे पवित्र जल से हाथ धोने के पश्चात उन्हें पौंछने पर तौलिया लाल रंग का हो गया। तुझ पर किसी डायन का असर है। तभी तेरे बच्चा नहीं होता। तुम जरा ठहरो मैं इसके लिए तुम्हें एक चमत्कारी अंगूठी देता हूँ। अरे श्यामू चमत्कारी अँगूठी लाना तो और दियासलाई भी लाना।'' श्यामू एक डोर से बँधी अंगूठी ले आया। डोर का दूसरा छोर एक छड़ी से बंधा था। ''श्यामू इस डोर को जरा दियासलाई दिखला तो'' –बाबा ने हुक्म दिया।

वहाँ उपस्थित लोग हैरान रह गए जब डोरी तो जल गई पर अंगूठी हवा में लटकती रही। बाबा ने अंगूठी को जोर से तोड़ा और रानी को पहना दी। फिर बाबा उसे एकांत में ले गया। बाबा धीरे से बोला – ''तुम्हें बच्चा जरूर होगा, यह मेरा दावा है। परंतु तुम्हारी डायन उतारनी जरूरी है। कल अमावस है। तुम रात को ठीक नौ बजे, बिना किसी को बताए अकेले मेरे डेरे पर आना और बाकी की तकलीफ कल दूर हो जाएगी।''

अगले दिन रानी जब बाबा के कहे अनुसार नौ बजे उसके डेरे को चुपके से चली तो उसके पति की नींद खुल गई। उसने रानी को बगैर बताए जाते देखा तो उसका पीछा करते–करते साधु के डेरे के पास पहुँच गया। दिवाकर ने तुरन्त झाड़ियों की ओट ले ली और इन्तजार करने लगा। दस–पन्द्रह मिनट बीत जाने पर रानी बाहर नहीं आई तो दिवाकर को चिंता हुई कि माजरा क्या है? तभी रानी की चीख पुकार सुनाई दी 'बचाओ–बचाओ', खतरा भाँपकर खुद वह भी जोर–जोर से 'बचाओ–बचाओ', चिल्लाता दौड़ा और अंदर जाकर देखता है कि साधु उसकी पत्नी की इज्जत से खेलने की कोशिश कर रहा है। इससे पहले कि वह कुछ कर पाए साधु के गुंडों ने उसे घेरकर पीटना शुरू कर दिया। पंरतु पाँच मिनट भी न बीते होंगे कि धड़ाधड़ गाँव के कुछ नौजवान अंदर आ गए। उन्होंने साधु और उसके चेलों की जमकर पिटाई की। फिर सबको पुलिस के हवाले कर दिया गया।

पुलिस थाने में खूब मरम्मत होने के बाद साधु ने बताना शुरू किया कि उसके चमत्कार महज हाथ की सफाई और विज्ञान के कमाल थे।

चाक का चूरा और चावल के मांड को मिलाकर कुछ छोटी–छोटी गोलियाँ बना ली जाती हैं। एक टिकिया अंगूठे और पहली अंगुली के बीच में छुपा ली जाती है। मंत्र पढ़ते हुए हाथ को झटककर गोली अंगुली के पोरों तक पहुँचाकर दबा दी जाती है। इससे लगता है कि हवा से भभूत पैदा की गई है। यह सब बड़ी फुर्ती और चालाकी से किया जाता है।

दूसरे नंबर के चमत्कार में हल्दी के घोल में सफेद तौलिये को भिगोकर सुखा लिया जाता है। पवित्र पानी असलियत में बुझे हुए चूने का पानी होता है। चूने के जल से हाथ धोकर जब हल्दी रंगे तौलिए से हाथ पोछें जाते हैं तो रासायनिक क्रिया से लाल रंग उभर कर दिखने लगता है।

चमत्कारी अंगूठी बनाने के लिए काफी हल्की अंगूठी ली जाती है। एक मजबूत डोर को तीन या चार दफा नमक या फिटकरी से संतृप्त घोल में भिगोकर सुखा लिया जाता है। इस प्रकार नमक या फिटकरी की एक परत हर बार डोर पर चढ़ जाती है। तत्पश्चात् इस डोर को शोरे के घोल में भिगोकर सुखा लिया जाता है। इस डोरे के एक सिरे पर अंगूठी बाँध दी जाती है और दूसरे को एक छड़ी से। जलाने पर शोरे के घोल के कारण डोर चिंगारी छोड़ती हुई जल जाती है पर नमक या फिटकरी की परतें जले हुए रेशों के रूप में अंगूठी को थामें रहती है।

न्यायलय में न्यायाधीश ने साधु को कठोर कारावास की सजा देते हुए उसे दस हजार रूपये का जुर्माना भी किया।

***

विज्ञान प्रसार/राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के अन्य प्रकाशन

पत्तों का चिड़ियाघर
अरविंद गुप्ता
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-061-1
पृष्ठ संख्या : 24 मूल्य : 20 रुपए

पंप ही पंप
सुरेश वैद्यराजन/अरविंद गुप्ता
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-062-x
पृष्ठ संख्या : 30 मूल्य : 20 रुपए

खेल–खेल में खिलौने
अरविंद गुप्ता/ रमेश कोठारी
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-065-4
पृष्ठ संख्या : 34 मूल्य : 20 रुपए

कुछ खोजें कुछ बनाएं
ललित किशोर/अनवर जाफरी
आई.एस.बी.एन. : 81-7272-005-X
पृष्ठ संख्या : 69 मूल्य : 25 रुपए

प्रकाशबत्ती का इतिहास
जे.बी.एस. हाल्देन
आई.एस.बी.एन : 81-7480-040-9
पृष्ठ संख्या 146+xx मूल्य : 35 रुपए

साबुन के बुलबुले और वे बल जो उन्हें गढ़ते हैं
सी.वी. बॉयज
आईएसबीएन : 81-7480-041-7
पृष्ठ संख्या : 109+xiv मूल्य : 30 रुपए

My Friend Mr Leakey
J.B.S. Haldane
ISBN : 81-7480-029-8
pp : 145+ xxx Rs. 40

Everything has a History
J.B.S. Haldane
ISBN : 81-7480-031-x
pp : 165+xxiii Rs. 45

ग्रहण : मिथक और यथार्थ
नारायण चंद्र राणा
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-055-7
पृष्ठ संख्या : 61 मूल्य : 21 रुपए

पूर्ण सूर्यग्रहण : आपके सभी प्रश्नों के उत्तर
नरेन्द्र सहगल/संदीप भट्टाचार्य
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-007-7
पृष्ठ संख्या : 37 मूल्य : 12 रुपए

राहु केतु की खोज
राकेश पोपली
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-009-3
पृष्ठ संख्या : 34 मूल्य : 12 रुपए

खोया हुआ जन्म दिन
राकेश पोपली
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-008-5
पृष्ठ संख्या : 56 मूल्य 20 रुपए

आकाश दर्शन का आनंद
राकेश पोपली
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-010-7
पृष्ठ संख्या 75 मूल्य : 25 रुपए

Getting Started in Sky Watching
K. Srinivasan
ISBN : 81-7272-018-1
pp : 45 Rs. 25

कहानी माप–तोल की
बलदेव राज दावर
आई.एस.बी.एन. : 81-7272-010-6
पृष्ठ संख्या : 45 मूल्य : 20

जानो और बूझो
बलदेव राज दावर
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-007-6
पृष्ठ संख्या . 12 मूल्य : 05 रुपए

आयोडीन सैनिक
डा. विजय गुप्ता
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-067-0
पृष्ठ संख्या : 52 मूल्य . 40 रुपए

क्यों और कैसे?
पार्थ घोष, दीपंकर होम एवं नरेन्द्र सहगल
आई.एस.बी.एन. : 81-7480-066-2
पृष्ठ संख्या 111 मूल्य 100 रुपए